त्रैमासिक ई-पत्रिका

उद्घोष

तृतीय संस्करण

अक्टूबर - दिसम्बर 2021

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ

उत्तर प्रदेश

संपादकीय समिति

डॉ नृपेन्द्र सिंह
अध्यक्ष दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
संरक्षक : उद्घोषक, त्रैमासिक ई-पत्रिका
सम्पर्क सूत्र : 9259049509

श्री नरेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान सम्पादक
सम्पर्क सूत्र : 7398372302

श्री भागवत शुक्ल
सह सम्पादक
सम्पर्क सूत्र : 9936595999

श्री उमेश चन्द्र जायसवाल
स्थायी सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री अनुज वर्मा
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री सर्वेश कुमार गौतम
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री ऋषि यादव
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, फर्रुखाबाद

श्री नन्दलाल
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, गोण्डा

श्री आदर्श श्रीवास्तव
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री राजकुमार खरवार
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, बांदा

श्री सुधीर पाण्डेय
सदस्य–सम्पादकीय समिति
जनपद न्यायालय, जौनपुर

उद्घोष ई-पत्रिका परिवार की ओर से समस्त न्यायिक कर्मचारी बंधुओं को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

(राजाज्ञा सं0 1083/7-137, 17/27-1928 तथा संख्या 99/7139, दिनांक 22 जनवरी 1931 द्वारा मान्यता प्राप्त)

नववर्ष 2022 मंगलमय हो .....

संगठन के माननीय सदस्यगण, उनके परिजनों, हित मित्रों एवं शुभचिन्तकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। बीते वर्ष में अधूरी रही आपकी खुशियां इस साल आपको मिल जाएं पिछले साल मिले हुए दुःख जीवन में कभी सामने न आएं, इस साल आपको यश, वैभव, सम्पन्नता और खुशहाल जीवन मिले।

डॉ0 नृपेन्द्र सिंह

प्रांतीय अध्यक्ष

संदीप चौहान

प्रांतीय संरक्षक

नरेन्द्र विक्रम सिंह

प्रांतीय ष्महासचिव

संपादक की कलम से ....

सम्मानित पाठकों और संगठन के सम्मानित सदस्यगण हम उद्घोष पत्रिका का तीसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। जब प्रथम बार हमने उद्घोष के प्रकाशन का विचार किया था तो हमारे संपादक मण्डल की भी यह भरोसा नहीं था कि उद्घोष का प्रकाश इतना सराहा जाएगा और पाठक इसके अंक की प्रतीक्षा करेंगे। हमारे विभाग में इतने कुशल और विद्वान लेखक भी है हमारे समाज को भी यह पता नहीं था। मै अपने साथी कर्मचारी गण जिनकी कलमकारी से निकली अद्भुद रचनाएं हमारे उद्घोष को बेहतरीन पत्रिका की श्रृंखला में ला खड़ी करती है उनका भी धन्यवाद करता हूं जो उन्होंने न्यायालय में कार्य करते हुए भी अपनी कलमकारी को इतना सजीव कर रखा है।

मुझे स्वयं कई रचनाएं पढ़ कर सहसा विश्वास नहीं होता कि इतने अच्छे रचनाकार हमारे बीच हैं। आपका हमारे साथ होना हमारा सौभाग्य है। आप समस्त लेखकगण और पाठकों को आने वाले नववर्ष की मंगलकामनाएं।

आशा है कि आप सबको उद्घोष का तीसरा अंक भी पूर्व की तरह ही आकर्षित करेगा।

धन्यवाद !

नरेन्द्र विक्रम सिंह

सम्पादक

सम्पर्क सूत्र : 7398372302

परिपक्वता

मेरी शख्सियत तो मेरी खामोशी है
आवाज तो खाली बर्तनों से आया करती है

हर किसी को स्वीकार करना चाहिए कि हमारी उम्र बढ़ेगी और उम्र का बढ़ना हमेशा परिपक्वता को दर्शाता हो..... क्योंकि

'ज्यों-ज्यों आपकी उम्र बढ़ती है, आप पहले से ज्यादा आत्मविश्वासी होते जाते हैं। इसकी वजह यह है कि आप कई समस्याएं झेल चुके होते हैं, अच्छे-बुरे दौर से गुजर चुके होते हैं। ये बातें आपको अनुभव देती हैं और परिपक्व, बुद्धिमान बनाती हैं। अनुभव और उम्र के अलग-अलग पड़ाव हमें दूसरों के सुख-दुख और मनोभाव समझ पाने की सूझ-बूझ देते हैं।'

हर बढ़ते कदम के साथ एक अच्छी सोच होती हैं। अगर जीवनी में सकारात्मक सोच हैं तो जीवन की हर मुश्किल बड़े ही आसानी से दूर हो जाती हैं और वही इन्सान की सोच नकारत्मक हैं तो वो अपने जीवन में सिवाय दुखों के और कुछ भी नहीं प्राप्त कर सकता और हमेशा अपने नसीब को दोषी ठहरता रह जाता है और इन्सान रूपी अनमोल जीवन को किसी पशु के समान जीते हुए बिताता है। इसलिए कहा गया है कि अच्छे विचार जीवन को उन बुलंदियों पर ले जाते हैं। जो इंसान अपनी अच्छी सोच के साथ अपने देखे गए ख्वाबों की माला में मोतियों की तरह पिरोता है, उसकी उपलब्धियां उसकी अच्छी सोच के अनुसार लगातार बढती जाती हैं।

अगर आप का नजरिया बुरा है तो आप कभी भी एक अच्छा दिन नहीं बिता सकते। अगर जीवन का आनंद लेना हैं तो अपनी बुरी और नकारात्मक सोच को बदलते हुए संघर्ष केवल अपने अधिकारों के लिए नहीं बल्कि न्याय पर आधारित समाज के निर्माण के लिए भी करें और हमेशा याद रखें कि संघठन ही शक्ति है बिखराव आपके तिनका-तिनका कर नष्ट कर देगा ।

(राजेन्द्र जौहरी)
भूतपूर्व प्रांतीय मार्गदर्शक (दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ0प्र0)
भूतपूर्व मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, जिला एवं सत्र न्यायालय, उन्नाव

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ जिला शाखाएं एवं उत्तर प्रदेश संघ साथियों ....

आपका भविष्य उज्जवल हो,**1976** में मुझे सेवा प्रारंभ करने का ईश्वर ने अवसर दिया और **2014** में सेवा निवृत हो गया ! इस दौरान मुझे आपके जिले बाराबंकी से प्रदेश स्तर तक संघ में भी कार्य करने का अवसर मिला काफी उतार चढाव देखने को मिले! इस विभाग में राजपत्रित अधिकारी बनने के अवसर हमारे कर्मचारियों के पास नहीं थे, संघ के चुनावों में चुनाव लड़ने पर हार जीत में लोगों में व्यक्तिगत वैमनस्यता उत्पन्न होती रही है, फिर भी संघ की सक्रियता से प्रदेश स्तर पर लोगों में जागरूकता बढ़ी व्यवहार स्थापित हुये कहा जा सकता है कि संघ ने हमारे अस्तित्व को व्यापक रूप दिया! हमारे प्रमोशन के द्वार खुल कर हमें तत्कालीन समय में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी का पद कर्मचारियों के लिए सृजित हुये! समय बीतता गया संघर्ष चलता रहा किसने नेतृत्व किया किसने नहीं किया से परे रहकर हम यदि सोचें तो मुंसिफी में प्रमोशन से पद तो नहीं मिला लेकिन रिटायर्ड होने के बाद लॉ ग्रेजुएट कर्मचारियों को स्पेशल मैजिस्ट्रेट बनने के अवसर मिले है इसे भी व्यक्तिगत नेतृत्व से ऊपर उठकर देखने पर हमें आभास होगा कि संघ की सक्रियता न होती तो नेतृत्व और नेतृत्व न होता तो संघ के महत्व को कैसे समझा जा सकता था ? आज संघ जहाँ पहुंचा है उसे और शक्ति देने की आवश्यकता है, जिसे हम व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ कर पूरा कर सकते हैं, लेकिन जिले स्तर पर नेतृत्व सँभालने को लोग तो तैयार है, आपसी संघर्ष को तो लोग तैयार है, प्रशासन का दोष निकालने को तैयार है,कैसे किस पोस्ट पर पहुंचा जाय इसके लिए तरीके के खोज के लिए तैयार है लेकिन अपने व भावी पीढ़ी के विकास के लिए काबिलियत होते हुये भी इस ओर सोंचने को तैयार नहीं है सिर्फ एक दूसरे की कमी पर ध्यान देने से संघ तीव्रता से शक्तिशाली नहीं बन सकता शक्तिशाली का तात्पर्य जिला न्यायाधीशों या प्रशासन पर दबाव बनाने से नहीं है बल्कि उनसे सामंजस्य स्थापित कर अदब व लिहाज से अपने कर्मचारियों को सुविधाएं उपलब्ध कराने से है इस संबंध में स्थानीय नेताओं को अपने में परिवर्तन कर जिम्मेदारी सँभालने की महती आवशयकता है, व्यवहार कुशलता से हम अपने कर्मचारियों के जीवन को महत्वपूर्ण और उपयोगी कर उनके जीवन को विकसित कर सकते है यही आज की महती आवश्यकता है!

प्रिय अनुज साथियों, नेता गण जरा ध्यान दीजियेगा वर्तमान महासचिव श्री नरेंद्र विक्रम सिंह आपके लिए कैसे भी हो, आपने उन्हें सपोर्ट किया हो या न किया हो लेकिन क्या आपने उनकी गतिविधियों को रीड किया या नहीं हम कह सकते है कि आपने संज्ञान ही नहीं लिया अगर लिया होता तो हमारी जिला जजियो में अनेक पद जैसे प्रशासनिक अधिकारी, सेंट्रल नाजिर, रिकार्ड कीपर क्रिमनल-सिविल हेड कापिस्ट, पोलिस कॉपिंग हेडकापिस्ट एवं कम से कम ए० डी० जेस मुंसरिम रीडर्स की पोस्टों को अगर गजटेड आफिसर पद में परिवर्तित न करा चुके होते तो उसके बारे में विद्वान जनपद न्यायाधीशों को कन्विंस कर माननीय उच्च न्यायलय को रिपोर्ट भेजवाना तो जिला स्तर के नेताओं का दायित्व बनता था क्योंकि विगत चुनाव में दो प्रमुख मुद्दे थे अनेक राजपत्रित पदों का जिलों में सृजन व तदर्थ कर्मचारियों का स्थाईकरण मैं पदों को गजटेड बनाने को महत्व देता हूँ। ग्रेड की लंबी भूमिका है! माननीय उच्च न्यायलय ने ऐसी रिपोर्ट जिला जजों से महासचिव एन वी सिंह के पत्र द्वारा माँगा था जिस पत्र को प्रिय श्री एन वी सिंह ने प्रसारित भी किया था! मैं चौनल्स पर देखा करता हूँ। इधर **4-5** माह से मेरे बाएं हाथ में मोबाइल चलाने से कंधे की नसों में इलेक्ट्रानिक चैनल इन्फेक्शन हो गया फलतः डाक्टरों ने लेट कर या बाएं हाथ में मोबाइल पकड़ कर चलाने पर रोक लगा दिया है। फलस्वरूप हमारे सक्रियता में कमी आई

है प्रिय मित्रों हम सेवा निवृत हो चुके है, पत्रकारिता व राजनीति में सक्रिय हैं गोमतीनगर से, हा लही में होम लीगल ओपिनियन देने के व्यवसाय के लिहाज से सक्रिय होने का ऐलान कर दिया है, फिर भी आपके विकास के लिए क्या होना चाहिए अब भी दिमाग आपके के तरफ चला आता है इस लिए नहीं कि अब हम आपके संघ में कोई पद चाहते है बल्कि हमें उस खेत से लगाव है जिस खेत को हम जोतते बोते थे और फसल ऊगा कर अपने परिवार अर्थात कर्मचारियों के विकास हेतु अध्ययन करते थे माना जाय तो हम न्यायिक दुनियां के किसान थे! ठंडक की रात्रि 1:24 पर हम आपके पत्रिका उदघोष के माध्यम से आपकी तरफ मुखातिब है, जबकि हमको संघ में महासचिव, अध्यक्ष पद पर हराने वाले हमारे संघ के नेता आपके भार से मुक्त हो चुके है, मुक्त वह नहीं हुआ जिसने अपने परिवार के मुकाबले आपको अपना परिवार समझा इस लिए अब भी कुछ याद दिलाने का प्रयास कर रहा हूँ, अध्यक्ष, महासचिव जिले या प्रदेश में कोई चुना जाय, पदाधिकारी जिले प्रदेश में कोई हो कम से कम प्रत्येक जिले में 10 ऐसे लोगों का एक समूह उत्पन्न कीजिये विना किसी के विरोध या फेवर के जो चुनाव लड़े या न लड़े जिले के या प्रदेश के पदाधिकारी बने या न बने लेकिन कर्मचारियो उनके परिवारों, सेवानिवृत के परिवारों से संपर्क में रहे जरूरत पड़ने पर जैसे माननीय अधिवक्ताओं की एल्डर कमेटी जिले में काम करती है वैसे एक ढांचा अपने अपने जनपदों में बनाकर, संघ को सहयोग कीजिये, आपके सहयोग से ही 2015 की लड़ाई में आपको विजय मिली है और अनेक मुद्दे चल रहे है यह मत सोचियेगा कि सब हल हो जाएंगे तो अमुक नेता का नाम होगा तो हम कैसे पदाधिकारी चुनाव जीतेंगे! प्रिय अनुजों आने वाला वख्त आधुनिकता से परिपूर्ण होगा जिसमें आपकी अहमियत अति सक्रिय नहीं होगी इस लिए एक्टिव हो कर कुछ पदों को गजटेड कराने के सम्बन्ध में चर्चा कीजिए, पुराने पत्रक देखिए और जुट जाइये अगर आप सक्रिय हो गये तो मेरा दावा है कम से कम हर जिले में कोर्टो की सक्रियता पर दो दर्जन पद गजटेड ऑफिसर के हो सकते है, ईश्वर डायरेक्ट आपको कुछ पकड़ाता नहीं है वह माध्यम बनाता है सामान्य मामलों में आप अपने मामले को सामान्य से विशेष बनाइए पदाधिकारी कोई भी हो निश्छल उसे मदद कीजिए, उसे सक्रिय कीजिये इसी में 1931 में पंजीकृत दीवानी न्यायलय कर्मचारी संघ का महत्व उजागर होगा आपका विकास होगा! प्रियवर जो हमें आपके संघ की बदौलत बड़ा सम्मान मिला, हालांकि प्रांतीय महासचिव व प्रांतीय अध्यक्ष बनने नहीं दिया गया लेकिन मेरा मानना है आत्मबल ने मेरा साथ दिया, कुछ पुराने साथियों ने साथ दिया, परमात्मा ने साथ दिया कि तत्कालीन माननीय चीफजस्टिस एम एन शुक्ल ने एस ए ओ पद रेकमेंड किया! सेंट्रल गवर्मेंट ने सी जे सम्मेलन के प्रस्ताव हमारे राष्ट्रीय संयोजकत्व और डिप्टी संयोजक हापुड़ की प्रतिभा तोमर के पत्र का एनी वे परिणाम है कि प्रत्येक जिलों में लॉ ग्रेजुएट रिटायर्ड स्पेशल मजिस्ट्रेट है! माननीय सी० जे० महापात्रा साहब ने जिस प्रकार चरणबंदन कर आर्शीवाद प्राप्त किया यह आपके संघ के महत्व को प्रदर्शित करता है! हानेस्ट, दयावान, अदबप्रहरी बन कर संघ की निः स्वार्थ भाव से समय व धन का दान कर संघ को अपना धार्मिक ग्रन्थ समझिये 2031 तक 75 परसेंट हर जिले के कर्मचारी गजटेड ऑफिसर हो जाएंगे आपको भी गाड़ी और अर्दली मिलेगा इसे भविष्यवक्ता सम्राट की भविष्य वाणी समझियेगा! अपना अपने परिवार और संघ व संघ परिवार का ख्याल रखते हुये वरिष्ठ कर्मचारियों व न्यायाधीशों का सम्मान कीजिये आपके दिन बहुरेंगे!

पंडित अनिल शुक्ल
पूर्व शाखा अध्यक्ष बाराबंकी, पूर्व प्रांतीय मार्गदर्शक
दीवानी न्यायलय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश
कानूनी सलाहकार उ प्र, स्वतंत्र पत्रकार,
गोमतीनगर, लखनऊ

कचहरी का बाबू

कचहरी की व्यवस्था की सबसे कमजोर कड़ी माना जाने वाला कचहरी का बाबू दुनिया का सबसे निरीह, प्रताड़ित प्राणी होता है। साथ ही साथ उसे सर्वगुण सम्पन्न मान लिया गया है, जैसे- पेशकारी भी करवा लो, लेटर भी टाइप करवा लो, आशुलिपिक का भी काम करवा लो, मासिक त्रैमासिक अर्द्धवार्षिक वार्षिक और हेन-तेन प्रकार की विवरणियां (स्टेटमेन्ट्स) भी निकलवा लो अर्थात् मुंसरिम का काम भी करवा लो, उन विवरणियों को आफिस- आफिस भी पहुंचवा लो अर्थात् चपरासी के काम में भी निपुण, उसके अतिरिक्त चूंकि पत्रावलियों की जिम्मेदारी उसकी है ही इसलिए पत्रावलियाँ सिलना भी उसका काम है अर्थात् दफ्तरी के काम में भी पारंगत। इस तरह से लगभग सभी जिम्मेदारियां बाबू के ऊपर डाल दी जाती हैं। पुरस्कारस्वरूप उसे मिलती हैं इनक्वायरियां। अनगिनत इनक्वायरियां, जो एक स्वस्थ सुन्दर नौजवान कर्मचारी को जिन्दगी भर झेला देती हैं और समय से पहले कुंठित, विकृत एवं वृद्ध बना देती हैं। कभी सनोन्नयन (इंक्रीमेंट) रूकता है, तो कभी प्रोन्नति। हद्द तो तब हो जाती है, जब बिना किसी इंक्वायरी में दण्डित हुए उसका सनोन्नयन और प्रोन्नति तत्काल प्रभाव से रोक दिया जाता है। हमारे इस न्याय के मंदिर में एक सर्वगुण सम्पन्न, बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं शक्तिमान जैसी शक्तियों से रत्नजड़ित माना जाने वाला एक अदना सा समूह- ग का कर्मचारी इस प्रकार पुरस्कृत किया जाता है।

मुझे एक बात नहीं समझ आती कि अगर एक अदना सा समूह- ग का कर्मचारी बाबू इतने लोगों का काम कर सकता है. तो क्या एक या दो दिन उस बाबू के अवकाश पर रहने पर बाबू का काम कोई और नहीं कर सकता। ऊपर से अगर किसी अन्य न्यायालय से पुरानी जीर्ण, क्षीर्ण पत्रावलियों के गई गठ्ठर जो गिनती में मात्र **1000-1500** पत्रावलियां हों और अंतरण द्वारा प्राप्त करने का आदेश हो जाए, तो बस समझो कि किसी ने जख्मों पर नमक डाल दिया हो, बाबू के उस जख्म को सभी मिल- जुलकर प्रतिदिन कई बार कुरेदते हैं। पत्रावलियाँ प्राप्त हुई या नहीं, सभी पत्रावलियाँ एक साथ अपने चार्ज में प्राप्त कर लो वरना माननीय के डाँट-डपट व नोटिसों से मुखातिब होना पड़ेगा। अगर बिना जाँच किये पत्रावलियाँ प्राप्त कर लीं और अगर उस पत्रावली में कोई

इंक्वायरी बैठ गई, तो बाबू की मदद के लिए कोई दिखाई नहीं पड़ता है। वो कहते हैं न कि, कोई न जाने पीर पराई। अपने अधीनस्थ को कार्य सम्पादित करने के लिए उचित वातावरण प्रदान करना अधिकारी संवर्ग व सरकार का परम कर्तव्य होना चाहिए। बाबू के चार्ज में प्राप्त एक पत्रावली पूरे न्यायालय में घूमती है, कई लोगों के हाथ में जाती है, सभी उस पत्रावली के साथ अपने स्वाभावानुसार सगा-सौतेला व्यवहार करते हैं। परन्तु, अगर उसमें से कोई एक पृष्ठ इधर-उधर है तो जिम्मेदार बाबू है और न मिलने पर इंक्वायरी की भेंट चढ़ जाता है।

पुरा काल में अंग्रेजों के जमाने से रजिस्टरों पर प्रविष्टियां दर्ज की जाती थी। कालान्तर में माननीय कम्प्यूटर महोदय ने न्यायालय की सीमा में प्रवेश किया। माननीय उच्च न्यायालय ने सभी अधीनस्थ न्यायालयों में कम्प्यूटर सिस्टम्स, सर्वर, प्रिंटर्स आदि पर बहुत पैसा बहाया। शायद उनकी मंशा कागज निर्माण हेतु बलि पर चढ़ने वाले पेड़ों को बचाने या पारदर्शिता व सुगमता बढ़ाने की रही हो। कर्मचारियों ने भी सुकून की साँस ली कि सब कुछ आनलाइन फीडिंग होगी, अब मोटे-मोटे रजिस्टर्स काले नहीं करने पड़ेंगे। परन्तु बाबुओं के कार्य के बोझ पर सुहागा लग गया, क्योंकि अब उन्हें मोटे-मोटे रजिस्टर्स को काला करने के साथ-साथ कम्प्यूटर पर भी सभी कार्यों को अपडेट करना था। मतलब, पाँचों उंगलियाँ घी में और सिर कढ़ाई में नहीं, अपितु भट्ठी में।

जिन विभागों में ड्रेस-कोड निर्धारित है वहां पर परिधान के लिए भत्ते दिये जाते हैं, उदाहरणस्वरूप- परिवहन विभाग, पुलिस विभाग। हमारे यहाँ भी ड्रेस-कोड सभी के लिए अनिवार्य है, किन्हीं अपरिहार्य कारणों से न पहन के आ पाओ तो माननीय वरिष्ठों के सामने लज्जित होना पड़ता है, यहाँ तक कि कुछ कर्मचारी भाईयों को सिर्फ टाई-कोट न पहनने पर दण्डित किया गया, उनका सनोन्नयन काट लिया गया। परन्तु, परिधान भत्ते के रूप में सभी को कुछ नहीं दिया जाता, वहाँ अनिवार्यता शीतनिद्रा में चली जाती है। सीधी सी बात होनी चाहिए, या तो ड्रेस-कोड न हो अगर हो तो उसके लिए नियमित रूप से पर्याप्त भत्ता मिले ताकि वर्ष भर में कम-से-कम दो जोड़ी सिला सके, जिससे माननीय महोदयों के कोप का भागी न बनना पड़े।

मेरे कुछ सहपाठी जो बैंकों व मेडिकल फील्ड में कार्यरत हैं, वो अपने संस्था द्वारा दिये गए भारत-भ्रमण के संस्मरण का वर्णन करते हैं, तो उनके लिए काफी खुशी तो होती ही है साथ-ही-साथ अपने लिए उतनी ही निराशा भी। यहाँ का बाबू पहली बात तो अपनी जिंदगी कचहरी के नाम कर चुका होता है, उसके लिए भारत-भ्रमण जैसी बातें पारलौकिक व मिथ्या हैं, उसकी पूँजी- उसके चार्ज की पत्रावलियाँ और उसकी यात्रा- मात्र कचहरी से आवास तक। उस पर अगर उसकी नियुक्ति उसके गृह जनपद में न हो तो उसके दर्द की कोई पराकाष्ठा नहीं जो उसे ताउम्र मिलेगा। अगर उसने अपने अर्जित अवकाश का उपभोग करके भारत-भ्रमण तो क्या उ०प्र० भ्रमण का भी दुस्साहस किया तो सबसे पहले उसका वेतन रोका जाएगा, उसी के खून-पसीने की कमाई। अगर कोई कर्मचारी चिकित्सीय अवकाश का उपभोग करने का दुस्साहस करे तो भी उसे इसी प्रकार पुरस्कृत किया जाता है। जिस समय उसके खर्चे बढ़े हुए होते हैं उसे उसकी जमा पूँजी के सहारे निर्जीव होने हेतु छोड़ दिया जाता है। इस विभाग में कर्मचारियों को मिलने वाली चिकित्सीय प्रतिपूर्ति का हाल भी किसी से छिपा नहीं है।

इस तरह, कई व्यवस्था प्रक्रियाओं का अनुपालन करते करते बाबू की कमर टूट जाती है। परिणामस्वरूप, मेहनत से प्राप्त की हुई नौकरी छोड़कर भागने या इसी को किस्मत मान लेने के अलावा एक बाबू के पास कोई विकल्प नहीं होता। न्याय-व्यवस्था के जिम्मेदार स्तम्भों में से एक बाबू संवर्ग को कचहरी की सबसे कमजोर कड़ी माना जाता है। परन्तु अधीनस्थ को अधीनस्थ ही समझा जाना चाहिए, गुलाम नहीं। उससे उतना ही कार्य लिया जाना चाहिए जो आधिकारिक रूप से मान्य हो।

(उमेश चन्द्र जायसवाल 'काफिर')
स्थायी सदस्य (सम्पादकीय समिति)
'उद्घोष' त्रैमासिक ई-पत्रिका
संगठन सचिव
उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, बस्ती

सजग होगें अधिकारों के लिए

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के सभी साथियों को सपरिवार आने वाले नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं, ईश्वर आप सभी पर अपनी आशीष बनाए रखें आप सभी सपरिवार स्वस्थ रहें प्रसन्न रहें और निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें । दोस्तों पिछला कुछ समय हमारे लिए बहुत कठिन था कोविड-19 के कारण हमे अपने बहुत से साथियों को खोना पड़ा पारिवारिक स्तर पर भी हम लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया हैं, उन सभी को मै हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं व ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

ना दोस्ती ना दुश्मनी के लिए,
वक्त रुकता नहीं किसी के लिए
वक्त के साथ बहता रहे,
यही मुनासिब है आदमी के लिए

दोस्तों वर्तमान में संघ अत्यंत चुनौतीपूर्ण स्थिति से गुजर रहा है जहां संघ ने 2015 बैच के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय से लेकर माननीय उच्चतम न्यायालय में अभूतपूर्व सफलता अर्जित की, संघ ने न केवल इस कठिन घड़ी में 2015 बैच के साथियों का साथ दिया बल्कि एक कदम आगे बढ़ कर उनको नेतृत्व प्रदान किया। मैं व्यक्तिगत रुप से अध्यक्षजी व महासचिव जी को आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने कार्य समिति के अध्यक्ष के रूप में मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी के योग्य समझा। 2015 बैच के संबंध में अभूतपूर्व सफलता के उपरांत जहां पूरे प्रदेश में संघ के प्रति विश्वास बढ़ा है लोग संघ के साथ जुड़े हैं वहीं कर्मचारियों में संघ से अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई हैं उन अपेक्षाओं पर खरा उतरना वर्तमान में संघ के लिए सबसे बड़ी चुनौती है । दोस्तों यदि मै संघ द्वारा दी गई दूसरी सबसे बड़ी जिम्मेदारी के विषय में चर्चा नहीं करूंगा तो लगेगा कि बेईमानी होगी मैं शेट्टी आयोग की सिफारिशों को लागू करने के विषय में दाखिल रिट की बात कर रहा हूं दोस्तों जब लगा कि अगले मोड़ पर मंजिल है तभी हमें फिर किसी भूलभुलैया का सामना करना पड़ता है मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस संबंध में हम सफलता प्राप्त करेंगे और बहुत जल्द सफलता प्राप्त करेंगे इसके लिए हमें जो भी करना होगा और जिस स्तर तक भी जाना होगा हम वो करेंगे उस स्तर तक जाएंगे ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द हम अपने लक्ष्य हासिल करेंगे ।

दोस्तों स्थानांतरण व मृतक आश्रित मे नियुक्ति कर्मचारियो से सम्बन्धित दो गंभीर विषय के संबंध में संघ द्वारा माननीय उच्च न्यायालय से निरंतर पत्राचार व अन्य प्रयास किया जा रहा है आशा करता हूं कि इस संबंध में माननीय उच्च न्यायालय जल्दी आवश्यक कदम उठाएगा ।

दोस्तों सितंबर माह संघ शक्ति के रूप में मनाया गया एक माह में इतने जिलों में संघ का पुनः संगठित होना एक सुखद अनुभूति रही। दोस्तों हमारी **80%** समस्या स्थानीय है जिन्हें जिला संघ के माध्यम से ही सुलझाया जा सकता है प्रांतीय संघ केवल सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है जिले की समस्याओं के लिए जिला को ही सक्रिय होना होगा। दोस्तों मैं आप सभी से एक वचन मांगना हूं कि आप अपने जीवन से उदासीनता को कोई स्थान नहीं देंगे। आज हमारी दुर्दशा का मुख्य कारण उदासीनता है अपने लिए अपने अधिकारों के लिए अपने कर्तव्यों के लिए अत्यधिक उदासीन है अगर हम सक्रिय रहेंगे तो ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान संभव ना हो मैं आपसे नव वर्ष में सजग सक्रिय व संगठित होने का आह्वान करता हूं और इन शब्दों के साथ में अपनी लेखनी को विराम देना चाहता हूं कि :-

सजग होगें अधिकारों के लिए,
हर कर्तव्य को हम निभाएंगे
सक्रिय रहेंगे हम सदा,
उदासीनता को भगाएंगे

एक बार पुनः आप सभी को
सपरिवार नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं ।
जय संघ, जय हिंद।

(अभिषेक सिंह)
वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

फूलों सा जब मन होता है
तब जीवन चंदन होता है
सदा अहेरी सा मन फिरता
जीवन भर वन वन मन फिरता
क्षण मे मन में ब्योम समाता
क्षण मे मन है कण बन फिरता
अपने जन जिसमें बस जायें
मन ऐसा आंगन होता है
मन क्षण मे संन्यासी होता
काबा होता काशी होता

मन घर की देहरी सदृश है
क्षण में प्रबल प्रवासी होता
जीव जगत सब मन में रहता
मन ऐसा बंधन होता है
मन यह गीत और गीता है
मन ही राम और सीता है
मन के हारे हार यहां है
मन से जो जीता जीता है
मन ही होता हास सलोना
मन नूतन क्रंदन होता है

-वियोगी

सर्वदेव चौबे, मुंसरिम सिविल जज (जू. डि.) शहर, वाराणसी

मेरी ओर से त्रैमासिक ई-पत्रिका उद्घोष के माध्यम से आप सभी को क्रिसमस और नववर्ष 2022 की शुभकामनाएं। बीता हुआ वर्ष हमारे लिए कई सुखद यादें, अमूल्य अनुभव, नई खोजें, ज्ञान और ज्वलंत छाप छोड़ गया है। यह हमेशा हमारे पास रहेगा, हम इन उपहारों का उपयोग अपने और अपने आसपास के लोगों के लाभ के लिए कर सकेंगे।

नया साल आपके लिए शांतिपूर्ण और खुशहाल हो, पोषित इच्छाओं की पूर्ति लाए, बुद्धिमान निर्णयों के कार्यान्वयन में मदद करे, और शानदार विचारों के कार्यान्वयन में मदद करे।

आपको और आपके प्रियजनों को अच्छा स्वास्थ्य, गतिविधि, आशावाद, समृद्धि, प्यार और पारिवारिक सुख और हम कामना करते हैं कि "हमारे न्यायिक प्रतिष्ठान में अपने न्यायिक कर्मचारी परिवार, अधिकारी, अधिवक्ता और वादकारी के बीच आपसी सौहार्द्य, प्रेम विश्वास की नींव मजबूत होगी और अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर उनको पाने का प्रयास करेंगे।

मंगल शुभकामनाओं सहित।

(राजेन्द्र जौहरी)

भूतपूर्व प्रांतीय मार्गदर्शक (दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ0प्र0)

भूतपूर्व मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, जिला एवं सत्र न्यायालय, उन्नाव

समस्त जनपद के मा० जनपद न्यायाधीश महोदय अभी हाल ही में भर्ती हुए जूनियर कर्मचारीगण को सीनियर पदों पर नियुक्त कर देते हैं, जिससे युवा एवं नवनियुक्त कर्मचारीगण को बिना किसी प्रशिक्षण एवं अनुभव के अत्यधिक जिम्मेदारी का कार्य सौंप दिया जा रहा है। अनुभव की कमी और बिना किसी प्रशिक्षण के कार्य करने पर गलतियां होना स्वाभाविक है, इसके लिए उन कर्मचारियों पर विभागीय जांच की भी तलवार कभी भी चल सकती है। साथ ही उनसे वरिष्ठ, अनुभवी कर्मचारियों को महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी से निर्वहन करने वाले पदों से हटाने पर उनके मनोबल को ठेस लगता है पर रोटी रोजी के चक्कर में काम करते रहते हैं यह कुप्रथा कब खत्म होगी, यह एक यक्ष प्रश्न है ?

मित्रों यदि इस बात के लिए कोई कड़ा कदम प्रदेश स्तर पर लिया गया तो सीधे एवं ईमानदार कर्मचारियों के साथ ज्यात्दी होगी। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि यदि कोई कर्मचारी बीमार हो गया और मेडिकल लीव पर जाता है तो उसकी तनख्वाह रोक दी जाती है, बीमारी में कर्मचारी क्या खाए और दवा एवं डॉक्टर फीस और बच्चों की पढ़ाई की फीस कहां से दे ? इस तरह कोई भी कर्मचारी अंततः कर्ज लेने पर मजबूर हो जाता है। इस समस्या का निराकरण भी बहुत जरूरी है, यही नहीं अर्जित अवकाश (EL) लेना कर्मचारी का अधिकार है, उसका वेतन यह कह कर रोक दिया जाता है कि कामचोर है उसका भुगतान दो या तीन महीने में किया जाता है। इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही जब भी कोई लंबी छुट्टी होती पड़ती है तो कई जनपद न्यायालयों में यह आदेश कर दिया जाता है कि समस्त कर्मचारियों को आदेशित किया जाता है कि अवकाश अवधि में अपने पुराने कार्य को समाप्त करें, कर्मचारी कार्य के बोझ तले बुरी तरह दबा हुआ है ऐसे में इन सभी महत्वपूर्ण समस्याओं पर इस पत्रिका के माध्यम से संघ का ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा।

धन्यवाद सादर !

(नरेन्द्र प्रताप मिश्र)

जिला एवं सत्र न्यायालय, जौनपुर

वेदना बैठी है इक ललकार बनकर,
काटती है हर व्यथा को धार बनकर।
वेदना ही स्रोत है मनु चेतना का,
है असाधारण हुनर ये वेदना का।
चोट पड़ती है असह्य जब पत्थरों पर,
तब प्रकट होता है पत्थर मूर्ति बनकर।
वेदना की लौ हृदय पर झेलता है,
नर वही कठिनाइयों से खेलता है।
वेदना के बिन सहज जीवन, मरण है,
पल रही है वेदना, जीवन, हवन है।

(आशीष मिश्र `अकबर')
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, झांसी

(प्रभात शुक्ल)
असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार
मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद, लखनऊ
खण्डपीठ, लखनऊ

इतना तो तय है
बड़ी उजली हैं तेरी गलियाँ,
पर करीब होकर भी बहुत दूर हैं
कल्पनाएं उन तक पंहुचकर,
लौटकर भौतिक धरातल पर,
यथार्थ को ढांढ़स बंधाती हैं
कि तुझको ही अपने रूप
में गढ़ना है इस देह के द्वारा
अंतिम सांस तक,
तेरे मोहपाश से कोई
नहीं निकल पाता,
तेरे सिवा,
कोई कुछ भी नही पाता,
इस देह से अटूट तेरा नाताय
तुझसे दूर,
कोई नहीं जा पाता,
हर कोई ऐसे ही निभाता,
सशरीर कोई तेरी गलियों में,
शायद कोई नहीं विचर पाता।

प्रभात

वही कमजोर
जिसकी नुमाईश जयादा,
यह दर्द बांटने वाला
कहीं दिखता नहीं,
उसके पास क्षोभ होगा
सबको दुखी ना देखने का,
वह प्रयत्नशील है।
उसको अपने दर्द से नफरत है,
इसलिये वह नशे में रहता है,
वह नरपिशाच समाज में
लोगों का स्वार्थ बनकर
पूरी की पूरी मानव सभ्यता
को नोंच नोंच कर खाने को आतुर है।
कुछ भी हो हमें अपने भीतर
उसे प्रवेश नहीं करने देना है,
हमें भी इसके लिए प्रयत्नशील रहना है।
हमें खुशियाँ बांटने के लिए
दर्द भी सहना है।

प्रभात

॥ राम ॥

पूछा मैंने रघुवर से कैसे हो प्रभु राम !
क्या एक क्षण का चैन रहा जब गयी सिया तज धाम।
लघु मानव आरोप लगा निज पत्नी आया।
वैदेही ने फलतः यह निष्कासन पाया।
हो साम्राज्ञी और प्रिया करुणानिधान की।
सुख से एक दिन रह न सकी क्यों मात जानकी।
सिया पावनी कब तक देगी अग्नि परीक्षा ?
कब तक शक्ति पे भारी होगी हरि की इच्छा ?

पापी का क्यों कृत्य पड़े सतजन पर भारी,
सिसके निरअपराध हसे क्यों अत्याचारी।
न्याय करे न नृप तो फिर तज दे सिंहासन,
कभी न धर्म से ऊपर है राजा का आसन।

सोच रहा था अब अवतार कहे क्या नर से,
तभी राम ने किया प्रत्युत्तर संयत स्वर से।
सीता का विक्षोह रहा न एक भी क्षण का,
था निर्योग कभी न सीता राम के मन का
मानव रूप में हूँ आखिर पालक का अवतार।
देव नहीं मानव तन में किया जगत व्यवहार।
हुआ निधन जब पिता का तब भी मै रोया था।

हुआ सिया का हरण न तब भी मै सोया था।
खर-दूषण का वध मैनें ही किया था रण में।
संग भ्रात व भार्या भटका था वन-वन में।

काम क्रोध मद लोभ से मानव रहे जूझता।
इनसे परे जो देव-मनुज वह उन्हें पूजता।
धर्म की जय हो वाक्य सभी करते उद्घोषित,
मन में पर चारों विकार को करते पोषित
विजित जगत माया कर तज दे क्रोध लोभ मद काम
राम रूप को तब सब कहते हैं पुरुषोत्तम राम।
लिप्त रहें चारो विकार से जो वह दानव।
उन्हें समर्पित काल को करने आया मानव।
हो सुर या फिर असुर रखे सब ह्रदय में इतना भान,
मृत्यु लोक में हो मानव की मर्यादा का ज्ञान

है विराट के सम्मुख सब कण एक ही जैसे,
हो नृप या फिर रंक कहाँ अंतर है कैसे,
सबके निश्चित धर्म है जिनका पालन करना,
चक्र है जीवन, धर्म का पालन और फिर मरना।
यह मत समझो रामचन्द्र यूँ करता व्यर्थ प्रवाद,
धर्म जनित मानवाअधिकार व साम्यवाद।

उतने ही व्यापक कर्तव्य जितनी व्यापक शक्ति
ईश नहीं चाकर है राजा उसे न चाहे भक्ति

वही सफल नृप उचित रीति से समझा जिसने मर्म ,
पूजा पद्धति नहीं अपितु कर्तव्य का पालन धर्म
भूला जब कर्तव्य पीट शक्ती का डंका
हुआ नष्ट रावण कुल तथा स्वर्ण की लंका

आसनधारी नही अपितु आसन होता बलवान,
न्यायपीठ के समुख श्रेष्ठि निर्धन है एक समान ,
रघुकुल सिंहासन के न्याय की है यह रीति।
मात्र न्याय ही न हो, अपितु उसकी प्रतीति।
नियम सन्नियम ताकि समाज रहे मर्यादित।
नृप को होना होता सर्वाधिक अनुशासित
वो नृप जो दावा करता है होने का भगवान,
आधा पशु है ध्यान से देखो वह आधा इन्सान।
क्यों न शीश उतारो उनके करते जो दुष्कर्म,
नर को यहीं अटल शिक्षा मत भूलो...राजधर्म।

था सीता के पास सुरक्षित न्याय का अवसर।
पर उदाहरण रखने को था रघुकुल तत्पर।

(राजेश तिवारी)
समीक्षा अधिकारी (हिंदी)
मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद, लखनऊ
खण्डपीठ, लखनऊ

श्री गुरु नानक जी पर विशेष रचना के साथ
आप सभी को गुरु पर्व की लख लख बधाई.....

गुरु नानक की गुरबाणी,
मानवता का सन्देश है,
मानव बनकर हमें रहना,
नानक प्रेम का उपदेश है,

बलिदान किया गुरु नानक ने,
हम सब पर उपकार किया,
अकाल पुरुख जो सर्वव्यापी,
सबकी आंखों ने दीदार किया,

गुरु नानक का ज्ञान हे मानव,
गुरु बाणी में सार समाया है,
गुरु नानक के ज्ञान को हमनें,
क्या हमनें जीवन में बसाया है,

दीन दु खी भूखों को देखों,
भोजन लंगर से करवाया है,
'मुनेंद्र' नानक के चरणों में,
हृदय प्रेम से शीश झुकाया है,

ऋणी रहेगा भारत हरदम,
गुरु नानक से विद्वानों का,
कर्ज चुकाया जाये ना 'मुनेंन्द्र'
गुरु नानक तेरे अहसानों का।

माँ जीवन की, प्रथम गुरु हैं,
माँ से हमारा जीवन शुरू हैं,
माँ ममता की, कोमल थाप,
करे जो हरपल, हमको माफ़,

माँ सर्वत्र, माँ ही संसार है,
माँ जहाँ की, पालनहार है,
माँ चारों धाम,माँ ज्ञान का समुंदर है,
माँ चरणों में, झुके मुनेंद्र है।

यार मेरे देश में ये क्या चल रहा है
हिंसा की आग में शहर जल रहा है
हर तरफ फैला है जहर जातियों का
आदमी यहां आदमी को निगल रहा है

यार मेरे शहर में ये क्या चल रहा है
हिंसा की आग में शहर जल रहा है

हर जगह पर डर का माहौल है
इंसान की नियत में बड़ा झोल है
दंगे ओर भ्रष्टाचार है चरम पर
ईमानदारी का उड़ता मख़ौल है
रिश्तों का सूरज यहां ढल रहा है
भाई भाई को यहां छल रहा है

यार मेरे शहर में ये क्या चल रहा है
हिंसा की आग में शहर जल रहा है

(मुनेन्द्र सिंह)
समीक्षा अधिकारी
मा० उच्च न्यायालय इलाहाबाद

यात्रा में यात्रा

यात्रिओं के बीच यात्री
क्या भोर क्या रात्रि
समय को भगाने की थे सोचते
समय आगे हम पीछे पहुँचते

जीवन की यात्रा की तरह
यहाँ भी जुड़ते हैं लोग
कहीं होता हर्ष कहीं पर शोक
सबके लिए बड़ी बड़ी बातें बिनते
हर एक अच्छे में खुद को गिनते

निराला अंदाज इस समय का
नहीं चाहते झेलना झेलना है पड़ता
इस झेलने में भी झोल है
अधिकांश की बातों में पोल है

कोई है व्यस्त चरसी मोबाइल का
कोई है मस्त किसी की स्टाइल का
कोई राजनीति में नीति ढूंढ रहा
कोई साथियों से आपबीती गूंथ रहा

कोई नए परिवार में जिम्मेदारी बो रहा
कोई अपने पुराने पत्ते धो रहा
कोई दोस्तों के संग मौज छान रहा
कोई फर्जी के किस्से विविध ढंग से तान रहा

बड़े बदले से आते हैं यात्रा में लोग नजर
अब आप ही बताएं...
कितना कर पाया वर्णित यह सफर

(आशुतोष झा)
जिला एवं सत्र न्यायालय
शामली

कभी अल्फाज बनते हैं, कभी आँसू बन जाते हैं।
कभी लोगों के चेहरे पर यही मुस्कान लाते हैं।
कभी काँटों से चुभते ये, कभी मरहम लगाते हैं।
कभी ख्वाबों के चेतक को यही तो पर लगाते हैं।

कभी तो प्रेम की लीला का ये श्रृंगार करते हैं।
कभी तो प्रेम और लीला का ये अलगाव करते हैं।
कभी जो खो गए थे यम की लंबी सी किताबों में,
उन्ही को याद करके ये काव्य संग्रह बनाते हैं।

कभी ये राम को ईश्वर कभी अल्ला बनाते हैं,
कभी हिन्दू मुसलमां को बड़ा कट्टर बनाते हैं,
कभी जो सामनें बैठे तो फिर तलवार उठती है,
कभी होली के मौसम में ईद की बात होती है।

बंधी जब आस मन में तो तराने गुनगुनाते है।
खुली जब बंद जंजीरें नया संवाद लाते है।
कटे जब पीर मन की तो रब का गुनगान गाते हैं,
मिले जब प्रीत मन की तो रस का सैलाब लाते हैं।

कभी ये न्याय के दर को सच का मंदिर बताते है,
उसी मंदिर के पंडित को अपना भगवान पाते हैं,

अगर जो फैसला मन के मुताबिक दूर पाते है,
उसी फिर देवता को ये कल का रावण बताते हैं।

कभी औरत की ममता को माँ का आँचल बताते हैं,
उसी औरत की क्षमता को दुर्गा काली बताते है,
हुआ ये क्या नज़र का फेर जब पापी छुपा मन मे,
करके मर्दन आबरू का उसे प्राण से हीन करते हैं।

(अभिनव तिवारी)
जिला एवं सत्र न्यायालय
लखनऊ

कोई सहारा तो मिले

सहमी हुई सी है जिंदगी, कोई सहारा तो मिले
इस तूफान भरे लहरों को कोई किनारा तो मिले,

यूँ तो हर शख्स तैयार बैठा है, उंगलियां उठाने को
कोई आँखें दिखाने को तो कोई फैसला सुनाने को,

पर जो हमे भी सुन सके वो शख्स हमारा तो मिले
सहमी हुई सी है जिंदगी, कोई सहारा तो मिले,

खिल उठेगी हर एक कली फिर से इस बाग-ऐ-गुलजार की
बस दिल को जो छू ले वो सुबह सुहाना तो मिले,

नहीं चाह इस जमाने में कई राह-ऐ-हमसफर की
बस एक जो रूह में बस जाए वो शख्स हमारा तो मिले,

सहमी हुयी सी है जिंदगी, कोई सहारा तो मिले
इस तूफान भरे लहरों को किनारा तो मिले।।

जमाना क्या कहेगा

(विवेक कुमार)
प्रधान सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, अमेठी
सम्बद्ध : मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

अजीब फलसफा है इस जमाने का और लोगों का,
कभी जो आते थे जमानें से डरकर हमारे आगोश में
आज कहते हैं दूर हटो जमाना क्या कहेगा,

कभी जो थामा करते थे हाथ इस जमाने मे खो जाने के डर से,
आज कहते हैं हाथ छोड़ो, जमाना क्या कहेगा,
छोड़ आते थे कभी महफिल जमाने की एक मुलाकात के लिए जो
आज कहते हैं मुझे जाने दो जमाना क्या कहेगा,

ये तो पता था कि वक्त हर पल बदलता है और बदलते है हालात
पर लोगों जज्बात बदल दिए ये कह कर कि,
अब बस बहुत हो गया, जमाना क्या कहेगा।।

बेटी

जब जब जन्म लेती है, बेटी।
खुशिया साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात ही बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए नए रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार- बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

(साज़िद अली)
जिला एवं सत्र न्यायालय, वाराणसी

(शैलेन्द्र कुमार चौधरी)
सेवानिवृत पेशकार
जनपद न्यायालय, उन्नाव

सांसो का यूं आना जाना, चलता रहता है ।
कुछ से मिलना कुछ से बिछुडना, चलता रहता है।।
छुप छुप कर इक दूजे को हम, देखा करते हैं ।
कुछ यू ही बस नजरो का लड़ना, चलता रहता है ।।
किसी बहाने इक दूजे के घर ,आते जाते हैं ।
इसी तरह से मिलना जुलना , चलता रहता है।।
गांव के गलियारे में जब, हम मिल जाते है ।
आंखो ही आंखो में ,गिला शिकवा चलता रहता है।।
जब से वो रूठी है मुझसे, हम बेजान हो गए है।
उनका मेरे ख्वाबों मे ,आना जाना चलता रहता है।।

न्यायपालिका (न्याय मंदिर) में कर्मचारी की भूमिका व स्थिति

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।

एक अप्रशिक्षित, अल्पशिक्षित की भूमिका का विधिक निर्वहन व दो पाटन (बार-बेंच)के मध्य समरसता प्रदान करने के दायित्व का निर्वहन, करते-करते अपना अस्तित्व समाप्त कर देता है। संवैधानिक व्यवस्था में उसे न्याय मंदिर का तृतीत व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी में नामित किया गया है।

उसका समर्पण इस स्तर का होता है कि वह अपने समस्त संवैधानिक मूलाधिकारों को न्याय मंदिर में समर्पित कर देता है परन्तु उसके साथ अस्पृश्यता का व्यवहार ही होता रहता है।

बड़ी विडम्बना है, कि दो पाटन (बार-बेंच) के बीच में उसे अल्पशिक्षित, अल्पज्ञानी की संज्ञा देते हुए अपने मध्य विधिक ज्ञान के दायित्वों के निर्वहन की अपेक्षा करते है। अपेक्षाएं पूर्ण न होने पर उस विधिक ज्ञान दायित्व के लिए उसे दण्डित करते हैं, जिसकी वह पात्रता ही नहीं रखता।

न्याय मंदिर के विग्रह (बेंच) के गौरव की सुरक्षा व सम्मान में सर्वस्व न्योछावर करने वाले उस कर्मचारी का दायित्व समझा जाता है, उसका संवैधानिक मूलाधिकार उस विग्रह में समाहित हो जाता है, उसका कार्य व्यवहार, आचरण सब उस विग्रह का ही हो जाता है, उसका अपना कुछ नहीं रह जाता है। अपना स्व-अस्तित्व समाप्त हो जाने की लम्बी अवधि की निरन्तरता उसकी संस्कार जन्य-वृत्ति बन जाती है जिससे वह कुंठित होता जाता है।

यह संस्कार उसके परिवार, समाज व संघ तक में परिलक्षित होने लगता है, वह मात्र एक अप्रशिक्षित, अल्पशिक्षित परन्तु कर्तव्यनिष्ठ योगदान देने वाला संवेदनशून्य प्राणी बनकर नीरसता पूर्वक अपने अस्तित्व को मिटाता हुआ अवसाद में चला जा रहा है।

इसके अलावा एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी है, जो न्याय मंदिर के विग्रह (बेंच) की दृढ़ता को परिलक्षित करने के लिए अपनी कमर में पटटा व विग्रह (बेंच) के गौरव को सुशोभित करने के लिए झब्बा बांधकर सदैव सजग प्रहरी के रूप में न्याय-प्रियता व न्याय-दृढ़ता को परिलक्षित करता रहता है। वह अपने नाम वेश, स्वभाव, कार्य, आचरण व सर्वस्व स्व-अस्तित्व का समर्पण उस न्याय मंदिर के विग्रह (बेंच) को समर्पित कर चुका होता है, उसके पास अपने अस्तित्व को परिभाषित करने के लिए कुछ नहीं होता। अपने अस्तित्व को समाप्त कर न्याय मंदिर के विग्रह (बेंच) के अस्तित्व को परिक्षित करना उसका संस्कार बन जाता है जो उसके परिवार समाज व संघ तक में परिलक्षित होने लगता है।

येषां न विधा न तपो न दानम
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यु लोके भुवि भार भूताः
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरिन्त।।

हम कर्मचारीगण (तृतीय श्रेणी व चतुर्थ श्रेणी) की यह स्थिति हो गयी है कि हमारी स्व-विधा, स्व-तप, स्व-दान, स्व- ज्ञान, स्व-शील, स्व-गुण, स्व-धर्म का अस्तित्व स्व न होकर न्याय मंदिर के विग्रह (बेंच) के गुणों के अस्तित्व में ही समाहित होकर परिलक्षित होता रहता है।

कौन है हमारे अस्तित्व को समाप्त करने वाला?
कैसे निकले मनुष्य होकर, जानवर की जिन्दगी से?
इस पर एक प्रयोगशाला होनी चाहिए, विचार होना चाहिए।

यह कोई व्यंग्य नही, निबंध नहीं, आलोचना नहीं, अपने अस्तित्व के लिए अपने मूलाधिकार की याचना है।

(अजब नरायन शुक्ल)
प्रधान सहायक
दीवानी न्यायालय, कानपुर देहात

दोस्ती

ऋषि यादव
अध्यक्ष
उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, फर्रुखाबाद
सदस्य (सम्पादकीय समिति)
'उद्घोष' त्रैमासिक ई-पत्रिका

कैसे बताऊं दोस्ती क्या चीज है
बस इतना समझ लीजें
एक हारते हुए इंसान की जीत है
हर रिश्ते से बड़ी इसकी प्रीत है
दोस्ती एक अकेले मन की मीत है
एक हारे तो दूसरा जितना सिखाएं
एक टूटे तो दूसरा मजबूत बनाएं
जो एक दूसरे की उदासी को ना देख पाए
एक को हसाकर दूसरा भी मुस्कुराए
कैसे बताऊं दोस्ती क्या चीज है
बस इतना समझ लीजे
एक हारते हुए इंसान की जीत है
एक दूसरे की खामोशी को जो बारीकी से पढ़ पाए
बिन कुछ कहे ही बड़ी सहजता से
हर दर्द का मरहम बन जाए
एक दूसरे की हथेली को थाम
एक के सफर को दूसरा मंजिल से मिलाए
एक की कामयाबी देख दूसरे की आंखें
खुशी से भर जाए
हर मोड़ हर परिस्थिति में जो
एक दूसरे का साथ निभाए
अपनी दोस्ती को एक खूबसूरत मिसाल बनाए
हर रिश्ते से बड़ी इसकी प्रीत है
दोस्ती एक अकेले मन के मीत है
कैसे बताऊं दोस्ती क्या चीज है
बस इतना समझ लीजे
एक हारते हुए इंसान की जीत है।

इतने महीन होकर भी इतने बड़े हो,
तीन साल से क्यों हमारे पीछे पड़े हो?
हर इक दरवाजे के बाहर खड़े हो।

ले आए तुम फिर तीसरी लहर,
थर थर कांपते हैं दोनों अधर,
कुछ तो ठंड है कुछ तुम्हारा डर,
अब तो कर लो तुम थोड़ी हया,
इस साल में अलग है क्या ?

तेरे जाने से साल होगा मेरा नया,
हम ना रहेंगे तो बचेगा कौन?
कौन रोएगा और हंसेगा कौन ?
जाओ विदा ले लो ओमेक्रोन।

खुशी घर के बाहर और अंदर हो,
लहरों का घर सिर्फ समंदर हो,
सबका नववर्ष स्वस्थ और सुंदर हो,
सबको नव वर्ष मंगलमय हो।

(लवकुश सरोज)
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

(डॉ0 कुमार विनोद)
प्रशासनिक कार्यालय
जिला एवं सत्र न्यायालय, बलिया

"इस साल न हो पुर-नम आँखें, इस साल न वो खामोशी हो
इस साल न दिल को दहलाने वाली बेबस-बेहोशी हो
इस साल मुहब्बत की दुनिया में, दिल-दिमाग की आँखें हों
इस साल हमारे हाथों में आकाश चूमती पाँखें हों
ये साल अगर इतनी मुहलत दिलवा जाए तो अच्छा है
ये साल अगर हमसे हम को, मिलवा जाए तो अच्छा है
चाहे दिल की बंजर धरती सागर भर आँसू पी जाए
ये साल मगर कुछ फूल नए खिलवा जाए तो अच्छा है
ये साल हमारी क़िस्मत में कुछ नए सितारे टाँकेगा
ये साल हमारी हिम्मत को कुछ नई नज़र से आँकेगा
इस साल अगर हम अम्बर से दुःख की बदली को हटा सके
तो मुमकिन है कि इसी साल हम सब में सूरज झाँकेगा"

नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं .....

वैसे साथ काफी पी तो सकते हैं, मगर
उसे चाय भी पसन्द हो तो अच्छा रहेगा।।
पहनना क्या है, ये फैसला उसका ही होगा, मगर
माँ से मिले तो ओढ़नी सर पर हो, तो अच्छा रहेगा।
ये घूंघट, पर्दा जैसे रिवाज मेरे घर में नही है, लेकिन
उसकी नजरों में बसती थोड़ी शरम भी हो, तो अच्छा रहेगा।
वो मेरी है, मतलब उसका गुस्सा भी मेरा ही हुआ,
बस मेरे परिवार के लिए नरम सी हो, तो अच्छा रहेगा।
उसकी रोटियां गोल हों, न हों फर्क नही पड़ेगा मुझे,
उसकी बातें कभी गोल न हों, तो अच्छा रहेगा।
उसे बेशक इतिहास, गणित वगैरह समझ आये न आये,
मेरे सामने होने पे, मेरी आँखें समझ जाए, तो अच्छा रहेगा।
मै वादा करता हूँ, उसका सबसे अच्छा दोस्त बनूँगा मै,
साथ उसके रहूं, तो दुनिया मैं भी भूलूँ, तो अच्छा रहेगा।
है पता, हर वक्त साथ रहना, नामुमकिन सा है जरा, लेकिन
जरूरत हो तो उसे पाऊं मै जैसे आंखे खोलूं, तो अच्छा रहेगा।

रवि विश्वकर्मा
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, फर्रुखाबाद

"तुम नहीं आए"

लम्हे सब बदल गए
पर तुम नहीं आए

दीपक भी जल गए
पर तुम नहीं आए
मुसलसल वक्त, ये रांह
सब निकल गए
पर तुम नहीं आए

ये कायनात, ये अब्र सा शहर
यहाँ सब बदल गए
पर तुम नहीं आये

वो सिसकियाँ, और सर्द रात
शब्द भी गजल हुए
पर तुम नहीं आए

तुम हो अँधेरे मे
रौशनी की तरह
हम कितना मचल गए
पर तुम नहीं आए

रूबरू हो तो लेते
महज एक दफा
सब तो मिल गए
पर तुम नहीं आए

अब और क्या था
कहने को तुम्हे
हम खुद संभल गए
पर तुम नहीं आए.

(इन्द्रेश कुमार)
लिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

"अभी कुछ बात बाकी है"

अभी उम्मीद है क्या अभी कुछ बात बाकी है,
खत्म हुआ सब कुछ तो क्या आस बाकी है?

वो लम्हें भी फिजाओं में अभी क्यूं घोलते खुशबू,
मेरी तन्हाइयों में भी तेरा अहसास बाकी है।

कमबख्त लेखनी भी हो गई तुझमें कहीं अब गुम,
मेरे हर हर्फ को अब भी तेरी ही प्यास बाकी है।

मैं निकलूं भी तो कैसे यादों के जनाजे से,
लिबास ए रूह से तेरे, मेरी हर सांस बाकी है।

शराब-ए-जाम में भी अब रही न बात वो अनपढ़,
लबों पे अभी तेरे छुअन की मिठास बाकी है।

(नितेश कुमार 'अनपढ़')
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बाराबंकी

भोलेनाथ की बारात

आज पार्वती का मन हर्षोल्लास से परिपूर्ण था, आखिरकार उसकी बरसों की तपस्या का फल उसे आज भोलेनाथ के रूप में जो मिलने वाला था। उसकी सखियां उसके आस-पास हसीं-ठिठोली कर रही थी और वो मंद-मंद मुस्कुराते हुए लजा रही थी। हिम नरेश हिमवान ने साज-सज्जा तो ऐसे कराई थी कि जैसे स्वर्ग खुद ही धरती पर उतर आया हो। और हो भी क्यों ना, आज हिमनरेश और रानी मैनावती की पुत्री पार्वती का विवाह जो था, वो बारातियों के आदर स्वागत में कोई कमी नहीं रहने देना चाहते थे। इतने बड़े नरेश होने के बावजूद भी वो स्वयं एक पैर पर खड़े होकर सारी तैयारियां कर रहे थे, आखिर देवों के देव महादेव उनकी बिटिया को ब्याहने जो आने वाले थे। ये सत्य था कि हिमनरेश और रानी मैनावती पार्वती के भोलेनाथ के साथ विवाह के इस फैसले से खुश ना थे, पर पार्वती की तपस्या और हठ के आगे उन्हें नतमस्तक होना ही पड़ा था। उनकी चिंता का कारण बस इतना था कि उनकी फूल-सी पुत्री कैलाश में कैसे रहेगी, जहां उसे महल जैसा भोग-विलास ना मिल पाएगा।

जैसे-जैसे बारात आने का समय नजदीक आ रहा था लोगों में फुसफुसाहट बढ़ने लगी, कोई तो भोलेनाथ का गुण-गान कर रहा था और कोई पार्वती के भोलेनाथ से शादी के फैसले पर अफसोस प्रकट कर रहा था।

हिमनरेश की नगरी में भोलेनाथ की बारात का प्रवेश हो चुका था। हजारों की भीड़ की कतार लगी थी, अपनी राजकुमारी पार्वती के वर के दर्शन करने के लिए। बारात के आगमन के साथ ही नागरिकों का कौतूहल ठंडा पड़ गया, मंगल गीतों की ध्वनि मंद पड़ गई थी। पहली बार ऐसी बारात देखने को मिली थी। चारों तरफ बस डमरू का ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। दूल्हा रथ की जगह बैल पर सवार होकर आया था, रेशमी वस्त्र के स्थान पर छाल से बने वस्त्र धारण किए हुए थे। और बारात का तो क्या ही कहना- कोई लंगड़ा, कोई लूला, कोई अंधा, डाकिनी, शाकिनी, यातुधान, बेताल, ब्रह्मराक्षस, भूत, पिशाच सब शामिल थे। बारातियों ने सजने-धजने की बजाय शरीर भस्म में रमाया हुआ था। बारातियों को देखकर सब स्तब्ध थे। लोग आपस में खुसुर-फुसुर कर रहे थे कि हमारी

फूल-सी राजकुमारी ने कैसे इस अघोरी को पसंद कर लिया। नंदी और वीरभद्र एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिए क्योंकि दोनों को इसके पीछे का कारण जो याद आ गया था- अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र श्री राम के विवाह में सम्मिलित होने सारे देवगण बाराती बनकर मिथिला की ओर जा रहे थे। मिथिला से पहले थोड़ी दूर पर एक किला था जिसमें से करुण रूदन की ध्वनि आ रही थी। सारे देवता आगे बढ़ चुके थे, अंत में भोलेनाथ थे, जिनके कानों में करुण रूदन पड़ा। आखिर भोलेनाथ से रहा नहीं गया और वो उस किले की तरफ चले गए। वहां जाकर वो देखते हैं कि अंधे, लूले, लंगड़े, कोढ़ी आदि सब के सब किले में कैद हैं। भोलेनाथ ने उनसे रोने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हें बारात देखने की मनाही है ताकि बारात के मार्ग में उन जैसों के आ जाने से कोई अपशगुन ना हो जाए। प्रभु श्री राम और सीता मैया के विवाह के प्रत्यक्षसाक्षी ना बन पाने के कारण वो सब दुखी थे। तब भोलेनाथ ने कहा, ‘‘तुम सब दुखी ना हो, मैं तुम्हें अपनी बारात में जरूर सम्मिलित करूंगा।’’ तब का दिन है और एक आज का दिन है भोलेनाथ ने अपने कहे शब्दों का मान रख लिया।

इधर सबकी बातें सुन-सुन कर रानी मैनावती का बुरा हाल था, वो मूर्छित हो गई। पार्वती को जब अपनी माताश्री की अवस्था के बारे में पता चला तो वे दौड़कर उनके कक्ष में गई। माता के सिर पर प्रेम से हाथ फेरा और कुछ पानी की बूंदें डालीं। आखिर थोड़ी देर में उन्हें होश आ गया। होश आते ही सबसे पहले उन्होंने यही कहा, ‘‘देख रही है ना मेंरी बच्ची ये सब, अब बता आखिर कैसे रह पाएगी तू ऐसे अघोरी के साथ। “पार्वती ने अपनी माता का हाथ अपने हाथों मे लिया और कहा, ”माताश्री! जिनके आसरे ये पूरी दुनिया चलती है, मैं भी उन्ही के सहारे हूँ। मेरे लिए ये धन-दौलत, सुख-सुविधा मायने नहीं रखते, मायने रखता है तो सिर्फ वो असीम प्रेम जो भोलेनाथ मुझसे करते हैं और मैं उनसे।’’ ये कहते हुए पार्वती की आँखों में चमक थी और ना जाने उस चमक में कैसा आकर्षण था जो उसे देखकर रानी मैनावती ने भी विवाह के लिए सहमति में अपनी गर्दन झुका दी और आगे बढ़कर लाड़ से अपनी पुत्री का मस्तक चूम लिया। वातावरण फिर से मंगलगीतों से गूंज उठा।

(निशा तिवारी)
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, कानपुर नगर

(ये कहानी है मेरे दोस्त तनवीर की जो हमारे न्यायालय परिवार का ही हिस्सा था और अब हमारे साथ नही है)

वो 26 अक्टूबर की तारीख और मंगलवार का दिन शायद ही मैं अपने जीवन में कभी भूल पाऊंगा क्योंकि वो दिन मेरे दोस्त तनवीर के साथ बिताया हुआ आखिरी दिन था। मुझे अच्छे से याद है कैसे तनवीर का मुझे सुबह ऑफिस में फोन आया कि मुझे डॉक्टर के पास चलना है शुक्ला की गाड़ी की चाबी लेके आ जाओ। उस समय तक तनवीर एकदम ठीक-ठाक था और अच्छे से बातचीत कर रहा था। घर से लेके डह्क्टर के पास जाने तक हम दोनो बाते करते हुए गए फिर पहुंच के तनवीर बोला की तुम जाओ मैं दवाई लेके चला जाऊंगा कोई दिक्कत होगी तो कॉल करूंगा ।

उसके बाद उसके घर से फोन आता है कि तनवीर डॉक्टर के यहां जीने पर गिर गया है उसको एडमिट करवा दो जाके। इतना सुनते ही मैं और अभिषेक शुक्ला उसके पास चले गए और उसको आनन फानन में एडमिट कराया और उसका ट्रीटमेंट शुरू करवाया, अब तक तनवीर को हां या ना करने का होश था जब उसको ट्रीटमेंट शुरू हुआ तो हमने सोचा की अब तनवीर रात भर में ठीक हो जाएगा और उसकी वाइफ और शुक्ला को छोड़कर मैं घर चला आया। उसकी तबियत खराब होती चली गई और उसको घरवाले लखनऊ ले गए जहां तनवीर ने आखिरी सांसें ली।

आज आफिस जाओ तो यही लगता है कि होगा किसी कोर्ट में। यकीन नही होता है कि वो हम सबके साथ नही है। उसके बारे में सोचो तो आंखे नम हो जाती है और उसके परिवार के बारे में सोचके ज्यादा नम हो जाती है।

सच में, यार इस जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है क्योंकि जिंदगी से ज्यादा बेवफा कोई नही होता है। कैसे एक पल में हंसता खेलता परिवार उजड़ जाता है

इंसान की भी फितरत है कि वो जाने के बाद ही इंसान का मोल समझता है कि कौन कैसा है? क्यो न हम जीते जी ही रिश्तों और इंसान की कीमत समझे। अब तो बस यही कहूंगा यार जिंदगी में फिर किसी रूप में मिल जाना यार,बहुत याद आते हो तुम।

‘चंद लम्हों, चंद खुशियों की तलाश में घूमता रहा में जहां में,’

‘बड़ी देर में समझ आया कि फकत एक मौत ही सच्चाई ही जिंदगी की।।’

(सूरज कमल)
जनपद न्यायालय,
फर्रूखाबाद

मेरी आँखों में एक ख्वाब पल रहा है।

(योगेश कुमार 'योगी')
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बदायूं

ख्वाब में है एक चेहरा,
हल्का धुँधला हल्का सुनहरा।
उस चेहरे पर मुस्कान अलग है,उस चेहरे की बात अलग है।
चेहरे पर मुस्कान अलग है, उस चेहरे की बात अलग है।
आँखें उसकी जैसे मधुशाला, होंठ हैं जैसे मय का प्याला।
गालों की लालिमा देखकर भोर का सूरज भी जल रहा है।
मेरी आँखों में एक ख्वाब पल रहा है।।
कानो में बालियां दमक रहीं है, पुर्णिमा के चांद सी चमक रहीं हैं।
बाल तेरे काले घुंघराले, जैसे घुमड़ते बादल काले।
देख के तेरा रंग-रूप, ये दिल मेरा मचल रहा है।
मेरी आँखों में एक ख्वाब पल रहा है।।
कभी कभी सपने में आकर, जो तू मुझे सताती है।
जैसे बहती नदिया, लहराती-सी पर्वत पर इतराती है।
पतली कमर है बलखाती-सी, गोरा बदन बर्फ-सी चादर
तेरी पायल की आवाज को सुनकर ,दिल मेरा ये चहक रहा है।
मेरी आँखों में एक ख्वाब पल रहा है।।

आई०पी०एस० मनोज कुमार शर्मा

मनोज कुमार शर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के विल ग्राम में हुआ था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। मनोज कुमार शर्मा बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में अच्छे न थे। वे हमेशा नकल के सहारे पास होने की सोचते थे। किसी तरह कक्षा-09, 10 व 11वी में वह थर्ड डिविजन से पास हो गये। जब मनोज कुमार भार्मा 12 वी क्लास में पहुँचे तब भी वो परीक्षा को किसी तरह पास होने का जुगाड़ सोचने लगे। 12 वी परीक्षा में मनोज के विद्यालय में एस०डी०एम० साहब आ गये जिस कारण वो नकल न कर सके और 12 वी क्लास में हिन्दी विषय को छोडकर सभी विषयों में फेल हो गये। मनोज एस०डी०एम० के रुतबा व पावर को देखकर काफी प्रभावित हुए और अपने दिल व दिमाग में इस बात को बैठा लिये कि अब उन्हे एस०डी०एम० बनना है। अपने लगन व मेहनत से दूसरे वर्श में उन्होने 12 वीं क्लास पास किया। इसके बाद वो ग्वालियर गये वहॉ से स्नातक की डिग्री लिया। इनकी परिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इन्होने पार्ट टाइम जॉब किया और मंदिरो में भिखारियो के साथ सोना पड़ा।

मनोज शर्मा के दिल व दिमाग में हमेशा एक ही बात फिल्म की तरह चलती रहती थी कि उन्हे एस०डी०बनना है, चाहे उसके लिए उन्हे कुछ भी करना पड़े जब उन्हे पता चला कि एस०डी०एम० बनने के लिए दिल्ली जाकर पढ़ाई करनी पड़ेगी तो वह बिना कोई सोच विचार किये दिल्ली के लिए चल पडे। इनके पास रुपया न था इस तरह दिल्ली में रहकर पढ़ाई करना बहुत कठिन काम था। फिर भी मनोज कुमार शर्मा हार मानने वाले न थे। वो आमीरों के कुत्ते टहलाने का काम करने लगे और उसकी कमाई से अपना खर्च निकालने लगे, और पढ़ाई अपनी अनवरत जारी रखे।

यू०पी०एस०सी० की तैयारी के लिए मनोज ने एक कोचिंग में एड़मिशन ले लिया वहॉ पर उनकी मुलाकात श्रद्धा नामक लड़की से हुई और दोनो लोगो में दोस्ती हो गयी। मनोज की अंग्रेजी बहुत कमजोर थी। एक बार वो यू०पी०एस०सी० की मुख्य परीक्षा देकर आये तो श्रद्धा ने उनसे पूछा कि आज का परीक्षा कैसा रहा तो मनोज ने बताया कि जो Terrorism पर निबन्ध आया था जिसे मैने बहुत अच्छी तरह से लिखा है। जबकि श्रद्धा ने देखा कि निबन्ध Terrorism पर न आकर

Tourism पर आया था, अपनी कड़ी मेहनत और लगन से उन्होने सिविल सेवा के परीक्षा की तैयारी शुरु कर दी। मनोज ने यू०पी०एस०सी० की परीक्षा में भी तीन बार असफल हुए मगर उन्होने हार न मानी और अपना चौथा व अन्तिम अटेम्ट की तैयारी जारी रखी। प्री व मेन्स की परीक्षा में मनोज इस सफल रहे मगर अन्तिम पड़ाव जो कि यू०पी०एस०सी० परीक्षा में बहुत महत्वपूर्ण होता है वो है साक्षात्कार। मनोज का ये यू०पी०एस०सी० का पहला साक्षात्कार था। जब वो साक्षात्कार देने के लिए कमरे में प्रवेश किये और थोड़ी देर में ही इन्टरव्यू बोर्ड के सदस्य समझ गये कि मनोज की अंग्रेजी बहुत कमजोर है। उन्होने मनोज से उनके इण्टर में एक साल गैप होने का कारण भी पूछा जिसे मनोज ने सही-सही बता दिया कि वो इण्टर में फेल हो गये थे। फिर बोर्ड के एक सदस्य ने पूछा कि आप को अंग्रेजी नही आती तो आप प्रशासन कैसे चलायेगे। मनोज ये बात सुनकर थोडा नर्वस हो गये, तभी एक बोर्ड के सदस्य ने मनोज से बोला कि आप पानी पी लीजिए। तब मनोज बोले कि मै ये पानी नही पीऊँगा क्योकि ये पानी कॉच के गिलास में है। मै स्टील के गिलास में पानी पीता हूँ। तब इण्टरव्यूर नाराज होकर बोला कि पानी के ग्लास से क्या मतलब है। तब मनोज ने कहा यही बात तो मै भी कह रहा हूँ। जैसे पानी महत्वपूर्ण है गिलास नही उसी तरह मेरी कार्य शक्ति महत्वपूर्ण है, भाषा नही। इण्टरव्यूर के एक सदस्य ने कहा कि आई०आई०एम० व आई०आई०टी० क्वालिफाई करने वाले आ रहे है। तो ऐसे में हम आपको क्यों सेलेक्ट करें। इस पर मनोज ने कहा कि 12 वी फेल होने के बाद यहॉ तक पहुँचा हूँ तो कुछ तो क्वालिटी मेरे अन्दर होगी।

इस तरह मनोज ने अपनी वाक्पटुता से इटरव्यू के सदस्यो का दिल जीत लिया और हारी हुई बाजी को अन्त तक जीत लिया इस तरह मनोज ने वर्श 2005 में यू०पी०एस०सी० की परीक्षा में 121 वॉ स्थान प्राप्त किया। उन्होने अपनी गर्लफ्रेड श्रद्धा से शादी कर लिया और श्रद्धा भी एक आई०आर०एस० अधिकारी है।

नोटः- यह कहानी मेरे द्वारा सोशल मीडिया व इण्टरनेट के माध्यम से गहन अध्ययन करके प्रस्तुत की गयी है।

(दिनेश कुमार गुप्ता)

वरिष्ठ सहायक

जनपद न्यायालय, कौशाम्बी

"मौत से मेरी बात हो गयी"

(नीरज मणि त्रिपाठी)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

जिंदगी के सफर में एक दिन, **मौत** से मुलाकात हो गयी
उसी क्षण में उससे कुछ बात हो गयी।
मौत ने कहा....
अब छोड़ो चक्कर, पूरा करने के अपने ख्वाब,
तुम्हारी सांसो का, हो चुका है, हिसाब...
बन्द होने वाली है, तेरी ये जिन्दगानी की किताब...
नाप ले तू दो गज जमीन, है तेरी रूखसती की बारी,
चुन ले तू अपना कफन, मेरे संग चलने की, कर ले तैयारी,
अब तेरे इस लहु हाड़-मांस के तन की,
अंतिम ये रात हो गयी।
जिंदगी के सफर में एक दिन,
मौत से मुलाकात हो गयी
उसी पल मौत से मेरी बात हो गयी....
सुनते, सुनते मौत की बात, मेरे रूह से निकली आवाज
जिन्दगी बेहतर हो जाये,
इसके लिए हर पल कितना सारा काम किया...
सुकुन पाने की चाहत में, एक पल ना आराम किया।
अच्छा है! तेरी बाहों में आकर, ये भी तमन्ना पूरी होगी,
सोऊंगा आराम से! न कोई कष्ट, न कोई मजबूरी होगी...
अब मोह माया का चक्कर छूटा, नई प्रभात हो गयी।
जिंदगी के सफर में एक दिन, **मौत** से मुलाकात हो गयी
उसी पल मौत से मेरी बात हो गयी....

आगे सफर था और पीछे हमसफर था..

रूकते तो सफर छूट जाता और चलते तो हमसफर छूट जाता।

मंजिल की भी हसरत थी और उनसे भी मोहब्बत थी,

ऐ दिल तू ही बता, उस वक्त मैं कहाँ जाता?

मुद्दत का सफर भी था और बरसो का हमसफर भी था,

रूकते तो बिछड जाते और चलते तो बिखर जाते।

(सन्तोष कुमार गुप्ता)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, इटावा

यूँ समँझ लो,

प्यास लगी थी गजब की,

मगर पानी मे जहर था,

पीते तो मर जाते और ना पीते तो भी मर जाते

बस यही दो मसले, जिंदगीभर ना हल हुए!!!

ना नींद पूरी हुई, ना ख्वाब मुकम्मल हुए!!!

वक्त ने कहा.....काश थोड़ा और सब्र होता!!!

सब्र ने कहा....काश थोड़ा और वक्त होता!!!

सुबह सुबह उठना पड़ता है कमाने के लिए साहेब,

आराम कमाने निकलता हूँ आराम छोड़कर।।

"हुनर" सड़कों पर तमाशा करता है और "किस्मत" महलों में राज करती है!!

"शिकायतें" तो बहुत है तुझसे ऐ जिन्दगी,

पर चुप इसलिये हूँ कि, जो दिया तूने,

वो भी बहुतो को नसीब नहीं होता।

जिन्दगी के वो पल

(ज्योति शंकर मिश्र)
सहायक
व्यवहार न्यायालय, चतरा (झारखण्ड)

पलों को हमने बाँध रखा है,
अपनी पलकों के साए में।
पर जिन्दगी के उन पलों को- मैंने कोशिशें तो बहुत की थी शायद,
ओझल न हो पलकों से।
इन पलों से गुस्ताखी की थी मैंने शायद,
तभी वो पल हमारे पन्नों में सिमटना ही सही समझा।
पलों की सिलवटों को हमने फिर भी,
रखा है अपने हृदय-गर्भ के पन्नों पर।।

मन कहता है यह नित्य विचार
लिख दूँ मैं कुछ माँ का दुलार
जब उठी कलम मन हुआ मौन
अधरों से प्रस्फुटन अब करे कौन
न हाथ उठे, न उर बोला
सिर्फ आंखें ही आंखें भर आईं
लगता है ऐसे जैसे
माँ हैं फिर से घर आईं
माँ हैं फिर से घर आईं

(सुनील कुमार 'सौरभ')
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बाराबंकी

इकलौता लड़का

लम्हा लम्हा गुजरता गया,
मैं बड़ा होता गया,
पता ही नहीं चला कहां खो गया बचपन मेरा,
ऐ खुदा, पता नहीं खफा हूं या एहसान मानू तेरा।

जिन्होंने सिखाया उंगली पकड़कर चलना,
उन्हीं से हो जाता हूं आज कल खफा,
कभी कभी तो चाहता हूं, छोड़ के जाना ये सब,
पर आसान नहीं है, इकलौता लड़का बनना।

बूढ़े मां बाप और तीन बहनें है, जिम्मेदारी निभानी है,
जिम्मेदारी निभाते निभाते, तकदीर भी चमकानी है,
सब सपने पूरें हो, जो भी मन के पास है,
इकलौते लड़के से और किसी को क्या कोई आस है।

दोस्तों के सामने जी खोल के हंस देता हूं,
खुश होता हूं जब उन्हें खुश देखता हूं,
पर उनके सामने आंसू छिपाने के लिए,
अपने गमों को, हंसी की तस्वीर बना कर रख देता हूं।

हंसता हुआ मैं, मगर सोंचता हूं,
क्या दुखों की छावों में जी सकता हूं,
जब मन भर आता है, यादों को लेकर,
मैं घर का कोई कोना ढूंढता हूं।

आंसू भी छिपाया नहीं जाता है,
अब दिल को बेहलाया नहीं जाता है,
इन दुखों के सागर में जाने क्यूं,
आज मन को डुबाया नहीं जाता है।

सोचा था, बचपन की दोस्ती, जिन्दगी भर साथ निभायेंगे।
सोचा था, मद्द के लिए मिल कर हाथ उठायेंगे।
न जाने कहां गुम हो गयी वो दोस्ती अंधेरे की छांव में,
सोचा था, कि यही दोस्त तिमिर में रोशनी की किरन दिखाऐंगे।

खैर..... ईश्वर की कृपा से अब अच्छे दोस्त पायें है,
जुबान के खराब बे''ाक हैं, पर सच्चे दोस्त पायें हैं,
माना की पुरानी दोस्ती में दम नहीं था यारों,
पर क्या करें, असली दोस्ती के मायने हमें अभी समझ आये हैं।

(प्रतीक बाजपेई)
वैयक्तिक सहायक
परिवार न्यायालय (अवस्थापना)
जिला एवं सत्र न्यायालय, लखीमपुर

वक्त का काम है चलते रहना,
थम जाना इसकी आदत नहीं।
लम्हा लम्हा करके बढ़ता रहता है,
थक जाना इसकी फितरत नहीं।।

बीत गया है जो आज,
वो कभी शुरू भी तो हुआ था।
शुरू हो रहा है जो आज,
वो भी एक दिन बीत ही जाएगा।।

बीता हुआ वक्त यादें देता है,
कुछ सबक देता है।
आने वाला वक्त उम्मीद देता है,
कुछ मकसद देता है।।

आने वाला कल आपके लिए यादगार हो जाए,
आपकी हर आरजू के लिए खुदा का इकरार हो जाए।
हमारे सर पर आपका आशीर्वाद यूँ ही बना रहे हरदम,
नए साल में मुकम्मल आपका हर एक ख्वाब हो जाए।।

(सौरभ शुक्ल)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, उन्नाव

कहानी - छुरछुरी

"हे अम्मा ! एक चीज बताओ । तुम तो कहत रही कि दीवाली आज है । लेकिन उँहा तो कल रात ही सब पटाखा फोड़े रहे थे और दिया भी जला रहे थे। हमसे झूठ काहे बोली तुम ?" अपनी माँ पे गुस्सा करते हुए छः साल की निशा बोली ।

"अरे पगलिया ! उ सब तो पागल हैं, एक दिन पहिले ही दीवाली मना लिए । तू उनका छोड़ । दीवाली आज ही है और हम सब तो आज मनायेंगे। तू परवतिया का ध्यान रखना । हम मेम साहब के यहाँ जा रहे हैं उधर से ही आते वक्त सब समान भी ले आएँगे ।" अपनी बेटी को फुसलाते हुए शांति ने कहा ।

"ठीक है अम्मा , जल्दी आना और सुनो हमका छुरछुरी भी ले आना ।" निशा खिलखिलाते हुए बोली ।

"ठीक है बिटिया दिखेगा तो ले आएंगे । अभी हम जात हैं । तुम दरवाजा बंद कर लो ।"

टिंग टान्ग.... टिंग टान्ग.....।

"अरे शान्ति ! आ गयी तू । चल अच्छा हुआ तू जल्दी आ गयी । देख कैसे दीवाली पे मेहमानों ने घर का बुरा हाल कर दिया । सबसे पहले तो तू सारे घर की सफाई कर डाल । खाना तू बाद में बनाना ।"

"ठीक है मेमसाहब ।"

"मेमसाहब ! ये फ्रिज में पनीर की सब्जी रखी है कोई खायेगा नही तो मैं ले जाऊँ ?" फ्रिज में रखी आधी खाई हुई पनीर की सब्जी देखकर शांति बोली ।

"हाँ हाँ ले जा और देख हलवा भी बचा होगा वो भी ले जा ।"

"ठीक है मेमसाहब ।"

"मेमसाहब ! वो सफाई भी हो गयी और बर्तन भी धूल दिए । खाना बना दूँ ?"

"हाँ । बना दे । उधर गोभी रखी होगी और आज थोड़ा चावल भी बना लेना रोटी के साथ ।"

"ठीक है मेमसाहब अभी बना देती हूँ और मेमसाहब वो आज शाम को हम नहीं आ पाएँगे ।"

"क्यों ? तुझे क्या काम आ गया ?"

"वो न मेमसाहब हमारे यहाँ दिवाली के अगली रात कहीं बाहर नहीं निकलते । पिछली बार भी तो बताया था मैंने आपको ।"

"अरे हाँ ! तूने बताया तो था। तेरे एम पी में भी न , कैसे कैसे रिवाज हैं । चल ठीक है मत आना और सुबह तो आ जायेगी न कल ?"

"जी मेमसाहब । सुबह तो आ ही जायेंगे हम।"

"ठीक है । चल अब जा जल्दी से खाना बना दे ।"

थोड़ी देर बाद ....

"मेमसाहब । खाना बन गया। दरवाजा बंद कर लो ।"

"रुक आ रही हूँ मैं । ये ले जा तेरी मिठाई और कुछ पुराने कपड़े भी हैं सोनू के । इसे भी ले जा ।"

"मेमसाहब ! वो कल छुरछुरी नहीं बची होगी ?"

"छुरछुरी ? तेरा मतलब फुलझड़ी ?"

"हाँ वही ।"

"अब तो दीवाली खतम भी हो गयी तू उनका क्या करेगी ?"

"वो....." सकुचाते हुये शांति ने सिर नीचे कर लिया ।

"अच्छा रुक देखती हूँ मैं । शायद बची होगी ।"

"ये ले तेरी छुरछुरी और ये अनार भी ले जा ये भी बच गए थे ।"

"थैंकु मेमसाहब ।" खुश होकर शांति ने धन्यवाद कहा ।

"थैंक्यू छोड़ । सुबह टाइम पे आ जाना बस । उनका आफिस भी है कल।"

"ठीक है मेमसाहब ।"

"अरे ! इतना सारा का ले आयी अम्मा । दिखाओ न ।"

जिज्ञासा से भरी निशा अपनी माँ की ओर दौड़ पड़ी ।

"अरे ! धीरज धर । सब दिखा रहे हैं। ये देख तेरे लिए कपड़े, ये रही मिठाई और आज तो हम पनीर और हलवा भी खायेंगे ।" अपना पिटारा खोलते हुए शांति बोली।

"अरे वाह ! मेरे मुँह में तो अभी से पानी आने लगा ।"

"धत पगली सी । जा ये सब ढाँक के रख दे वरना खराब हो जाएगा ।"

"और वो कहाँ है ?"

"क्या ?"

"हमारी छुरछुरी ।"

"अरे धत तेरी की ! वो तो हम भूल गए ।"

"जाओ फिर हम अब दिवाली भी नहीं मनायेंगे ।" गुस्से से मुँह बनाते हुए निशा बोली ।

"अरे दईया ! एतना गुस्सा ? चलो ठीक है । तुम दीवाली नही मनाओगी तो हम ये छुरछुरी और अनार परवतिया के साथ जला लेंगे ।" अपनी एक साल की बेटी को गोद में लिए शांति, निशा को चिढ़ाते हुए बोली ।

"अरे ! अनार भी लाई हो का अम्मा ?" खुश होकर निशा बोली ।

"हाँ पगलिया। चल जा तैयार हो जा फिर अपनी दीवाली मनाई जाए।" निशा के गाल पे हाँथ फेरती हुई शांति मन ही मन अपने झूठ पे पछतावा करती और अपने चेहरे पे हँसी का पर्दा डाले उसकी ओर निहारती रह गयी। खिलखिलाती हुई निशा दौड़ कर अपने कपड़े बदलने चली गयी । इस सच से अनजान कि जो दीवाली वो आज मनाने जा रही है वो तो कल ही बीत चुकी है । मगर वो कहते हैं न कि खुशियाँ मनाने के लिए किसी दिन, त्यौहार या मुहूर्त की जरूरत नही होती । बस चेहरों पे मुस्कुराहटें ही काफी होती है ।

रुछुरछुरी .....

(दिनेश गुप्ता)

वरिष्ठ सहायक, जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

सचिव, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र०, फर्रूखाबाद

(शान्ति त्रिपाठी)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, बस्ती

नव वर्ष का दिन विश्व में हर किसी व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर से भरा होता है। भारत के साथ-साथ विश्व के सभी देश नए साल के शुरुवात पर जश्न मनाते हैं और अपने प्रियजनों के साथ मिल कर इस दिन का लुफ्त उठाते हैं।

नया साल अपने साथ नयी उम्मीदें, नए लक्ष्य, नए वादे, नए सपने लेकर आता है। लोग अपने आप से कुछ नए वादे करते हैं और ये कोशिश करते हैं की उन वादों को आनेवाले साल में पूरा कर सके। ऐसा माना जाता है की अगर नए साल का पहला दिन अच्छा और खुशी से बीते तो आनेवाला पूरा साल सुखपूर्वक बीतता है। लोग अपना एक लक्ष्य तय करते हैं की वे आने वाले नए साल में क्या क्या नयी चीजे करेंगे।

नया साल एक नई शुरूआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है। पुराने साल में हमने जो भी किया, सीखा, सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर, एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए। जिस प्रकार हम पुराने साल के समाप्त होने पर दुखी नहीं होते बलकि नए साल का स्वागत बड़े उत्साह और खुशी के साथ करते हैं, उसी तरह जीवन में भी बीते हुए समय को लेकर हमें दुखी नहीं होना चाहिए। जो बीत गया उसके बारे में सोचने की अपेक्षा आने वाले अवसरों का स्वागत करें और उनके जरिए जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

नव वर्ष 2022 की असीम शुभकामनाएं !

(लवकुश सरोज)
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय, बहराईच

जिन्दगी का एक और वर्ष कम हो चला
कुछ पुरानी यादें पीछे छोड़ चला

कुछ ख्वाइशें दिल में रह जाती हैं
कुछ बिन मांगे मिल जाती हैं

कुछ छोड़ कर चले गये
कुछ नये जुड़ेंगे इस सफर में

कुछ मुझसे बहुत खफा हैं
कुछ मुझसे बहुत खुश हैं

कुछ मुझे मिल के भूल गये
कुछ मुझे आज भी याद करते हैं
कुछ शायद अनजान हैं
कुछ बहुत परेशान हैं
कुछ को मेरा इंतजार हैं
कुछ का मुझे इंतजार है

कुछ सही है
कुछ गलत भी है
कोई गलती तो माफ कीजिये और
कुछ अच्छा लगे तो याद कीजिये

फिर से उठना जानता हूं मैं

(शिवम श्रीवास्तव)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मिर्जापुर

सफलता के दामन मे जी भरकर सोना चाहता हूं
जो आज तक न कर सका वो करना चाहता हूं
यह न समझो, असफलता का तूफां गिरा देगा मुझें
गिर भी गया तो क्या, फिर से उठना जानता हूं मै

मालूम हैं मुझें मन एकाग्र करना मुश्किल होता हैं
कोईं भी कार्य लगातार करना थोडा कठिन होता हैं
यह न समझों, रंगीन रोशनियो मे मन भटक जाएगा मेरा
भटक भी गया तो क्या, उसें सही रास्तें पर लाना जानता हूं मैं

काम को टालनें की आदत जीवन बर्बाद कर देती हैं
ज्यादा सोचनें की आदत बीमार बना सकती हैं
यह न समझों, बर्बाद और बीमार हो गया हूं मैं
हो भी गया तो क्या, फिर से आबाद होनें की कला जानता हूं मैं

बिना लक्ष्य बनाए कोई भी मंजिल प्राप्त नही होती
न हों इच्छा तो कोईं भी योजना परिणाम नही देती
यह न समझों, रात के अन्धेरे मे तीर चला रहा हूं मैं
चल भी गया तो क्या, संकल्प की मशाल जलाना जानता हूं मैं

कुछ कर गुजरनें की चिन्गारी सभी दिल मे होनी चाहिये
छोटें बीज को बड़े वृक्ष बनाने की कला जाननी ही चाहिये
यह न समझों, वो चिन्गारी अब आग नही बन सकती
नही भी बनी तो क्या,
पानी की एक बून्द से सैलाब बनाने का हुनर जानता हूं मैं।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ
2022
HAPPY NEW YEAR
मात्र :
1199/-
प्रति वर्ग फुट
नौसड़ रोड़, गोरखपुर
3 साल की आसान मासिक किस्तों में प्लॉट बुक करायें
तुरन्त रजिस्ट्री-तुरन्त कब्जा पाएं
OM SHIV REAL ESTATE
A NAME YOU CAN TRUST
Om Shiv Real Estate
A Name You can Trust
Contact Us : 7311174199 & 7311174200
E-mail : om.shiv.real.estates@gmail.com
L.I.G, Buddha Vihar Colony, Near L.I.C. Office,
Taramandal, Gorakhpur-273 016+

बचपन का जमाना

एक बचपन का जमाना था,
खुशियों का खजाना था।
चाहत चाँद को पाने की थी,
दिल तितली का दीवाना था।

खबर कुछ ना थी सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था।
थक हार-कर स्कूल से आना,
पर खेलने की जाना था।

रानी की कहानीयाँ थीं,
परियों का फसाना था।
बारिश में कागज की कश्ती थी,
हर मौसम सुहाना था।

हर सोल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था।
गम की जुबान नहीं होती थी,
ना जख्मों का पैमाना था।

रोने की वजह ना थी,
ना हसने का बहाना था।
वो बचपन का जमाना था,
जो लौट के ना आना था।
वो बचपन का जमाना था,
जो लौट के ना आना था...

(मुकेश कुमार)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, हमीरपुर

कुछ कच्चे, कुछ पक्के धागों सी जिंदगी ।
कुछ सच्ची को झूठी बातों सी जिंदगी
हंसना, रोना फिर चुपके से सुबकना ,
कुछ मीठी कुछ खट्टी यादों सी जिंदगी ।
वो दोस्त, वो यार, वो बचपन वाला प्यार,
कुछ नई कुछ पुरानी कहानियों सी जिंदगी
खुद के सपने और कुछ करने का जुनून,
कुछ छोटे कुछ बड़े ख्वाबों सी जिंदगी।
वह छज्जा वह खिड़की वह स्कूल वाला प्यार,
कुछ भूला कुछ याद एहसासों सी जिंदगी ।
अब घर की जिम्मेदारी और क्या कहेंगे लोग वाला समाज,
कुछ पाना और बहुत सारा खो देना तुम्हारी कमी सी जिंदगी।
लोगों की बातें और वेबुनियादी सवाल कुछ अच्छे कुछ बुरे खयालों सी जिंदगी।

(अतुल त्रिवेदी)
वाद लिपिक
जनपद न्यायालय, लखीमपुर

पल पल बिखरता मैं....

(रीतेश कुमार)

सहायक अभिलेखपाल परीक्षक

जनपद न्यायालय, कानपुर नगर

सपनों की आस में पल-पल बिखरता में, पल पल संवरता मैं।

पल-पल उलझता मैं,

पल पल सुलझता मैं।।

ये मैं ही हूं या मैं ही था,

यह सोच।

पल पल पिघलता मैं,

पल पल सुलगता मैं।।

पल पल बिखरता मैं,

पल.....मैं।

बड़े-बड़े सपनों की आस लेकर,

यूं निकल पड़ा अकेला सा मै।

जब भी मिल जाती कोई छोटी सफलता, या उसे, पल-पल चहकता मैं।

पल पल निखरता मैं,

पल पल बिखरता मैं।।

पल पल उलझता मैं,

पल.....मैं।।

मन में उत्साह लेकर, रगो में विश्वास भरे।

काट-काट कर अभिमन्यु सा व्यूहों को मैं,

लक्ष्य को पल पल निहारता मैं, असफलता का किंचित स्मरण मात्र से।

पल-पल खो जाता मैं,

पल-पल सो जाता मैं।

पल-पल बिखरता मैं,

पल पल संवरता मैं।।

सपनों की आस..... मैं।।

- इंसान को बड़ी सफलता के लिए आपको कभी-कभी बड़े जोखिम लेने पड़ते हैं।
- सफलता का जश्न मनाने के लिए ठीक है लेकिन विफलता के सबक पर ध्यान देना ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- हम हमेशा अगले दो वर्षों मे होने वाले परिवर्तन को अधिक महत्व देते है और अगले दस वर्षों में होने वाले परिवर्तन को कम आंकते हैं. खुद को निष्क्रिय मत बनाओ।
- अगर आपको लगता है कि आपका शिक्षक खडूस है तो आप तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि आपको कोई बास नहीं मिल जाता है।
- मनुष्य के पास निर्माण करने की और विनाश करने की दोनों ही क्षमताएं है।
- कोई निर्णय लेने से पहले हजार बार सोचे लेकिन एक बार निर्णय लेने के बाद हजार मुश्किलें आने पर भी कभी पीछे न हटे।
- असंभव भी सम्भव होगा एक बार कार्य करना शुरू तो करें।
- दुनिया की अधिकतर महत्वपूर्ण चीजे उन लोगों ने प्राप्त की हैं जिन्होंने उम्मीद ना होने के बावजूद अपना प्रयास निरंतर जारी रखा।
- सदस्य जो भी हो समाधान का हिस्सा बने केवल सवाल उठाने और बाधाओं का रोना रोने मत बैठो।
- जब लोग हार मान लेते हैं तो उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि वह सफलता के कितने करीब हैं।

(अभिषेक कुमार यादव)
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय, झांसी

हालात-ए-कोरोना

निःशब्द हूँ मैं क्या लिखूं, स्तब्ध मन के भाव कोय
हो विश्व जब ऐसी परिस्थिति में, तो मैं कैसे लिखूं।
जो कल तलक थे साथ वो, हफ्तों तलक दिखते नहींय
हम रह नहीं सकते थे बिन जिनके, वो अब मिलते नहीं।

थे वो निराले दोस्त संग, जिनके रंगे होते थे हमय
है हालात-ए-कोरोना कि वो, घर से निकल सकते नहीं।
है दिशा एक परिवार जिसमे, रोज संग बढ़ते थे हमय
पर आज ये हालत है कि, घर से निकल सकते नहीं।

पर ठीक है तैयार है हम, घर में रहने के लिएय
है जिम्मेदारी आपकी भी, अपने भारत के लिए।
हो देश जब विपत्ति में, सह लेंगे हर अभाव कोय
निःशब्द हूँ मैं क्या लिखूं, स्तब्ध मन के भाव को।

(विष्णु कुमार शुक्ल)
कनिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, संतकबीर नगर

'मानवता'

हे मानवता क्यों रोती है, धरा से धीरज क्यों खोती है।
यह है तेरी धैर्य परीक्षा, इससे विमुख तू क्यों होती है।
देख प्रेम और सत्य अहिंसा, ये सब भी मुरझाए हैं।
लेकिन प्राण अभी है बाकी, सब ये आस लगाए हैं।
फिर एक आदम फिर एक हौवा, श्रद्धा-मनु फिर आएंगे।
फिर से होगी तेरी श्रद्धा, फिर तू पूजी जाएगी।
अगर खो दिया तूने धीरज, तब प्रलय आ जाएगी।
बचेगा कोई ना शेष धरा पर, सब कुछ लुप्त हो जाएगा।
सोच जरा क्या तेरा होगा, क्या तू खुद बच पाएगी।
हे मानवता क्यों रोती है, धरा से धीरज क्यों खोती है।

(अखिलेश यादव)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, एटा

गीत और कविता के पारस्परिक सरोकार

कविता अपने मूल सरोकारों- सामाजिक, सांस्कृतिक दायित्यों का निर्वहन करती हुई अपने व्यक्तित्व को समय-समय पर बदलती रही है। रचना के स्वरुप का यह बदलाव ही युग विशेष संदर्भो को आत्मसात करके विभिन्न काव्यान्दोलनों के रूप में अपने को प्रकट करती रही है। संप्रेषण की दृष्टि से संवेदना को कम से कम शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता सिर्फ कविता में ही है इसलिए कविता जनमानस की भोगी हुई अभिव्यक्ति व यथार्थ है। यह कोई अंधानुकरण नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है कि कविता अभिव्यक्ति के बाद कवि की नहीं रह जाती बल्कि सबकी हो जाती है। अभिव्यक्ति के सारे खतरे स्वयं वहन करती है इसीलिए कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह अधिक बोधगम्य, मार्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में सक्षम और संप्रेषण है।

गीत और कविता में मौलिक अंतर है। गीत वस्तुतः मानव मन की मूल अथवा स्वाभाविक वृत्ति है। भावना जब घनीभूत होती है तब अभिव्यक्ति गेय या संगीतमय होने लगता है। चाहे वह एकांत में मस्ती के गीत गाने वाले श्रमिक-कृषक वर्ग हो या श्बाथरूम सिंगरश संगीत माधुरी स्वयं प्रमाणित कर देती है। खेतों ले मेड पर जब हरीतिमा के बीच कंधे पर कुदाल लिए किसान खड़ा होता है तो वह अपनी आत्मानुभूति को रोक नहीं पाता है, कुछ गुनगुनाने लगता है। मन की हजारों परतों के बीच दबे रहते हुए भी वह रागात्मक वृत्ति खुलकर होठों से निरूसृत होने लगती है। और पूरा वातावरण गीतमय होने लगता है। आत्मानुभूति आभ्यंतर विशेषता है जबकि रागात्मकता व वैयक्तिकता उसकी वाह्य विशेषता है। प्रत्येक गीत, गान अथवा गेय रचना गीतिकाव्य के अंर्तगत नहीं होता। गीतिकाव्य की परिधि में आने के लिये यह आवश्यक है कि कवि की निजी अनुभूतियों को अपने रूप से प्रकट करने वाला हो इस दृष्टि से जो गीत, गान सहज या स्वाभाविक नहीं है अथवा नीति उपदेश वैचारिक स्तर पर अथवा सामाजिक तत्वों का समावेश जिसमें रहता है गीतकाव्य नहीं कहे जा सकते। यही पर कविता और गीत के बीच अंतर को देखा जा सकता है। एक ओर जहाँ मानव हृदय की वैयक्तिक गीतिकाव्य रागात्मक अभिव्यंजना की संगीतात्मक अभिव्यक्ति गीतिकाव्य है वही कविता की कोई सुनिश्चित और सर्वमान्य पूर्ण परिभाषित करना सीमातीत करना ही है। कविता समुद्री तलहटी में डूबे आत्मा द्वारा प्रदत्त चेतना व संस्कार का संवाहक रूपी गोताखोर के मुंह से निकली आखिरी सांस की उपलब्धि हुआ करती है।

जीवन संघर्षों की झलक, बुनियादी मूल्यों की ताप संवेदना की आँच में तपते हुए अक्सर देखा जाना, अपने अधिकारों को छीने जाने की पीड़ा एवम् इसके प्रति तमाम सचेतताओं के बाद कुव्यवस्था से जुझने के लिए कृत संकल्पित होना, विद्रोह और आक्रोश की भावना को मुखर करना कविता का स्वर है, यही उसकी हठ-धर्मिता और रचना धर्मिता भी है। कविता क्यों? रचना के प्रति सामाजिक सरोकारों से जूझता यह प्रश्न निश्चित रूप से आज सबसे बड़ी चुनौती है। लिखते रहते हुए भी श्न लिखने का कारणश तलाश रही भटकती पीढ़ी को अंतर्द्वंद्व से ऊपर उठना होगा। आख़िर! न लिखने का कारण क्या हो सकता है? यह अनुत्तरित प्रश्न साहित्य के पटल पर छोड़ जाना दायित्व बोध के मंडराते संकट की ओर इंगित करता है उसे संतोषप्रद परिणाम समाज से

नहीं मिल पा रहा है शायद इसी छटपटाहट में यह यक्ष-प्रश्न करना पड़ा है। आज तमाम विषय भरे पड़े है। फिर भी गम्भीर साहित्यिक चिंतक, कभी-कभी कह उठते है आज प्रेमचंद होते तो... कबीर होते तो२ आदि-आदि! गम्भीर लेख, निबंध, नाटक, कहानी के लाले पड़े हैं यदा-कदा देखने को मिल रहे हैं गम्भीर पाठकों का अभाव व पुस्तकों के भाव आसमान छूने से भी काफी असर पड़ा है। एक समय था अब शमशेर बाल बोलेगी के उदघोष के साथ अपनी बात दृढ़ता पूर्वक रखते थे।

आज संवेदनाएं मर रही हैं। संयुक्त परिवार टूटते चले जा रहे हैं। इसके लिए निश्चित रूप से पश्चिम से आयातित अस्तित्व वादी दर्शन भी कम जिम्मेदार नहीं है मूल्य हीनता, मूल्य भंजकता, मूल्य विपर्यय, अकेलापन, अजनबीपन, घुटन, संब्रास इत्यादि फैलते जा रहे हैं। इतिहास गवाह है कि जब-जब समाज संकट में होता है, भ्रष्टाचार के आकंठ में या भोग विलास में डूबा रहता है सिर्फ और सिर्फ कविता ही हमें बचाती रही है। समाज को उबारने में अपना महती योगदान देती रही है। चाहे बिहारी ने दरबारी कवि के रूप में जयसिंह को सावधान किया हो या कबीर ने सामाजिक समरसता स्थापित करने हेतु कुरीतियों पर प्रहार किया हो या तुलसीदास द्वारा लोकमंगल की भावना जागृत करने की बात हो। हमेशा रचनाकारों ने समाज को सावधान किया है। जवाहरलाल नेहरू को सीढ़ियों से लड़खड़ाते वक्त दिनकर ने यही कहा था कि जब जब राजनीति लड़खड़ा जाती है साहित्यकार उसे बचा लेता है हमेशा राजनीतिज्ञों ने साहित्यकारों को सम्मानित किया है परंतु आजकल एक नया चलन शुरू हुआ है आयोजकों द्वारा स्वयंभू राजनीतिज्ञ चांदी के मुकुट कवि सम्मेलनों के मंच पर साहित्यकारों के बीच पहनते हैं क्या यह समीचीन है? कवि घंटो मंच पर राजनीतिज्ञों का इंतजार करते हैं निश्चित रूप से यह सोचनीय विषय है। बुद्धिजीवियों, कवियों के मध्य एक घिनौना मजाक है। इससे कवि असहज हो उठता है। कवि या साहित्यकार स्वभावत आत्मस्वाभिमानी होता है। कवियों द्वारा राजनीतिज्ञों को सम्मानित करना उल्टी गंगा बहाने के सदृश है जो मूल्यों में ह्रास होने का संकेत है और साहित्यकारों को सम्मानित करने की जगह अपमानित और उपेक्षा करने का षड़यंत्र है।

भीड़ चाहे कितनी अराजक हो जाए कविता अराजक नहीं हो सकती। कलमकार यदि सो जायेगा तो ऐसी स्थिति में समाज का स्वरुप कितना विकट हो जायेगा आप सोच सकते हैं।

कविता सीधे-सीधे जनमानस को झकझोरती है, गिरते हुए को उठाने का यत्न करती है, उसे संघर्ष करने की प्रेरणा देती है, जीने की कला सिखाती है और मानवीय संवेदनाओं को उकेरते हुए समाज में सभ्यता और संस्कृति का बीजारोपण करती है। इसीलिए कविता वर्तमान दौर में सर्वाधिक प्रासंगिक व वरेण्य है।

गीत और कविता में मौलिक अंतर है। गीत वस्तुतः मानव मन की मूल अथवा स्वाभाविक वृत्ति है। भावना जब धनीभूत होती है तब अभिव्यक्ति गेय या संगीतमय होने लगता है। चाहे वह एकांत में मस्ती के गीत गाने वाले श्रमिक-कृषक वर्ग हो या श्बाथरूम सिंगरश संगीत माधुरी स्वयं प्रमाणित कर देती है। खेतों के मेड़ पर जब हरीतिमा के बीच कंधे पर कुदाल लिए किसान खड़ा होता है तो वह अपनी आत्मानुभूति को रोक नहीं पाता है, कुछ गुनगुनाने लगता है।

(डॉ0 कुमार विनोद)
प्रशासनिक कार्यालय
जिला एवं सत्र न्यायालय, बलिया

शायद .....

उपर पंखा, नही चलता है
नीचे बाबू रोता है
रो, जा बाबू, रो,जा
काम से लथपथ हो जा

हर कोई यहां पर आएगे
गर्मी सब खूब दिखाएगे
बाबू -बाबू कह -कह कर
अपनी चार बात सुनाएगे

स्वयं में सिमटा,बोझ से घिरा
शिकायत -ए- समय कहाँ से लाएगे
बाबू खाली कब होगा
कब पंखे के पास वो जाएगे

आ रहा है ठंडा मौसम
तब प्रकृति से राहत पाएगे
तब तक थोड़ा सबर रक्खे
गर्मी को सहते जाएगे

बाबू को भर दो गर्मी से
गर्मी से बाबू लथपथ है
जलते रहेगे सूरज सा
और रौशनी करते जाएगे

बाबू बनकर लिया है जन्म
मर कर ही मुक्ति पाएगे
सबकी सबकी सबकी सुनेगे
बिना कहे ही निकल वो जाएगे।

असाधारण दिन

नींद ने साथ छोड़ दिया है
कहती तू जा काम के संग
काम बोलता मैं बहुत बड़ा हूँ
रहता हूँ परेशानी संग
शरीर बोलता बहुत थक गया हूँ
है तेरे पास तो नींद भी तंग
सहयोगी भी साथ नहीं है
विश्वास की आपस में है जंग
मिनटों की दूरी सदियों लगती
समय भी बना हुआ है अपंग
चौबीस घण्टे, खुली आँख रही तो
हो जाएगी जल्दी बंद।
बातो और विचारो में यहा
लगता है जैसे हुआ है जंग
गर परेशानी तू अलग न हुई
हो जाएगी जीवन से जंग
काम का क्या है चलती रहेगी
कोई भी चाहे ना हो संग

मैं शायद यहां, चला भी जाऊ
ना गिनती का कभी होगा अंत
संभव हो, लोग ना समझ भी समझे
पर सुविधा बिल्कुल, बड़ा शून्य अनंत
उच्च से उच्चतम बिन्दु पर भी
जमा हुआ मानो खून खतम।
विद्या इतनी बहरी हो गई
विद्वान खड़ा परेशानी संग
शब्द भी शायद सुनते नहीं है
सभ्यता, संस्कृति का नया यही है अंग
न दिन का रात से है रिश्ता-नाता
ना ही नींद से कुछ मेल है खाता
सुकून तो सचमुच हार गई है
जो होती थी कभी आजाद पतंग
भविष्य की ओर नजर पड़ी तो
वर्तमान में खड़ा में लड़ा हुआ मैं
हावी कभी न होने दूंगा
जब तक सांस रहेगी संग।

(मारुती)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, वाराणसी

तूफानों ने की है यलगार, बडे गुमान में
यानी अपनी भी है कुछ, हस्ती जहान में
वो समझता है कमजोरी, खामोशी को मेरी
बंदिशें हैं तहजीब की, मेरी जबान में
सुना है वो ढूंढता है मुझे, क़त्ल करने को
बता दो उन्हें हम बैठे हैं, अपने मकान में
निभायेंगे अहद-ए-वफा वो, कह नहीं सकते
सूरतें धुंधली धुंधली सी हैं, सबके ईमान में
पूछते हैं सबब मुझसे मेरे, तन्हा आवारा पन का
कर रहा हूँ इंसान की, तलाश इंसान में
मसले पे मोहब्बत के फर्क, नहीं मजहबों में
बात जो गीता में लिखी है, वही कुरान में।
बिछड कर अपनों से उन्हें, मिली हैं रुसवाई
जमीनी हक़ीकत छोड के जो, उडे आसमान में।

सलीका ज़िन्दगी जीने का, हमे आया देर से
ज़िन्दगी ने भी मुझे, आईना दिखाया देर से
लोग समझते थे दीवाना, उसके ग़म में मुझे
खता मेरी कि मैं भी, रोकर मुस्कराया देर से
हम तडपते कब उससे, बिछडने के ग़म मे
इश्क़ कर के उसने, मुझे ठुकराया देर से
आईने के सामने घन्टों, सोचता रहता था मैं
कम्बख्त आईने ने भी, सच बताया देर से
हवाओं ने बताया वो, तडपता है मेरी खातिर
काफिर वो लेकिन मेरी, गजल गुनगुनाया देर से
आ गई हिचकी आखिरी, मुझे मेरी मजार में
संगदिल ने आखिर अपना, दिल पिघलाया देर से
मयकदे से उठकर हम, जाते भी तो कहां
निगाहों से साक़ी ने, जाम पपलाया देर से
खुश फहमी में थे, वो आशना है मुझसे
लोगों ने उसकी बेरुखी का, किस्सा सुनाया देर से
खलिश थी मेरी खातिर, उसके दिल में कुछ
पैग़ाम इश्क़ का मगर, उसने भिजवाया देर से
याद उसकी लिए घूमे, सहरा बस्ती पर्वत जंगल
यकीन दीवानगी का मेरी, उसको आया देर से

अदीबों को उनका इल्म, फिर याद कराया जाये
फर्ज़ की अदायगी का, नया सबक सिखाया जाये
यकीनन झूम उठेंगे मैखार, खुमारी में डूबे हुए
जम उन्हें गर साक़ी की, निगाहों से पिलाया जाये
गफलत है हर किसी को, अपने खुदा होने की
लाजिमी है हकीकत का, उन्हें आईना दिखाया जाये
लबरेज है खुदगर्जी से, इल्म अलीमों का आज कल
तलबग़ारों के वास्ते कोई, नया भगवान बनाया जाये
लुटकर भी खडा हूँ, उजडे दरख़्त की मानिंद
सोचते हैं मेरे चाहने वाले, मुझे कैसे गिराया जाये
रुसवा होगी मोहब्बत ग़र, नुमाइश हुई जख्मों की
बना के अमानत जख्मों को, दिल में सजाया जाये
क़ातिल ही बैठ जायें अपने, ग़र बन के मुंसिब
मजलूमों को आखिर किससे, अब इंसाफ दिलाया जाये
तकल्लुफ तमाम जीने में, और दुश्वारियां दुनिया की
बुरा क्या जो हर गम, धुऐं में उडाया जाये।

(योगेश कुमार शर्मा)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मथुरा

न्यायालय कर्मचारी गण सहारनपुर की एक अनूठी पहल

बार एवम बेंच द्वारा जनपद सहारनपुर में कर्मचारी गण के व्यावहारिक सहयोग से दीन हीन निराश्रित असहाय की क्षुधा शांत करने के लिए एक अनूठी पहल की गई है। दिनांक 06-03-2019 को शुरू की गई। ये अनवरत सेवा अब वट वृक्ष का रूप ले चुकी है । वास्तव में न्यायालय के कर्मचारी गण ही इस संस्थान की नींव तथा निर्माता है । वास्तव में इस पुनीत कार्य का व्यवहारिक स्वरूप कर्मचारी गण का सेवा भाव निस्वार्थ सेवा व समर्पण है हमारे कर्मचारी कर्मवीर बन कर प्रातः से प्रतिदिन श्री अश्वनी शर्मा अपने सहयोगियों सर्व श्री अहमद, सुरेंद्र, अमीन, रमन, नीरज, इंद्र, गोविंद, प्रदीप यादव व अन्य साथियों के साथ **फूड बैंक** पर उपस्थित होकर सेवा स्थल पर भोजन की आशा में लंबी पंक्ति बद्ध को भोजन सेवा आरंभ करते करते है । 03 'डिग्री' के पारे की कपकपाती ठंड अथवा वर्षा से भीगते तनबदन कोई भी मौसम अथवा कोरोना महामारी का भय जब सामान्य जन घर से बाहर निकलने को भी भय ग्रस्त हो ऐसी परिथितियां भी इन कर्मवीर जनों को विचलित नहीं कर सकी है। कोरोन काल में कोविड मरीजों के लिए घर घर भोजन सेवा, मेडिकल कालेज में भी भोजन सेवा फूड बैंक परिवार द्वारा अनवरत जारी रही। इनकी सेवा से प्रभावित अन्य कई संस्थाएं भी अब इस पुनीत कार्य में सहयोगी बन रही है।

मैं आशा करता हूं दीवानी न्यायालय सहारनपुर द्वारा किया गया सेवा का ये उद्घोष अन्य जनपदों के लिए भी प्रेरणादाई वा मार्गदर्शक बन सभी को ऐसी ही निस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करेगा।

(राजेन्द्र लाल)
सेवानिवृत वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
जनपद न्यायालय, सहारनपुर

नई सुबह

"Beauty is truth, truth beauty, that is all
Ye know on earth, and all ye need to know-"

----John Keats

सत्य क्या है? इसका जवाब देने की कोशिश अनेक दार्शनिकों और मनीषियों ने की है, लेकिन वे कोई संतोषजनक परिभाषा नहीं गढ़ पाए हैं। सत्य के बारे में माना जाता है कि यह गूँगे का गड़ है। गूँगा गुड़ के स्वाद का अनुभव कर सकता है, पर वाणी से उसे व्यक्त नहीं कर सकता। सत्य और अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने लिखा है-

'पहले मैं ईश्वर को सत्य कहता था, अब सत्य को ईश्वर कहता हूँ। जैसे मैंने ईश्वर को देखा नहीं है पर उसकी झलक ज़रूर पाई है, वैसे ही सत्य को मैं परिभाषित नहीं कर सकता, बस यही दावा कर सकता हूँ कि मेरी सारी यात्रा सत्य की ओर है।'

सत्य की ओर उनकी यात्रा ही ईश्वर की ओर उनकी यात्रा थी। दरअसल गाँधी जी सत्य की ओर यात्रा नहीं कर रहे थे, बल्कि सत्य को जी रहे थे। आज के आधुनिक एवं भौतिकतावादी युग में हमें भी सत्य को न सिर्फ पहचानने बल्कि उसे अमली जामा पहनाकर जीने की कला को विकसित करना होगा। हम जिस संस्था से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, इसका मुख्य ध्येय एवं मकसद है- सत्य की तह तक पहुँच कर न्याय करना। न्याय इंसानी समाज का अहम पहलू ही नहीं, प्रकृति का नियम भी है। सत्य से परे न्याय की कल्पना एक दिवा स्वप्न मात्र है। हमारी भारतीय न्याय व्यवस्था प्राचीन काल से ही संसार में अपना बेहतर एवं उत्कृष्ट मक़ाम रखती है। किन्तु वर्तमान समय में हमारी न्यायिक व्यवस्था पर भी तरह-तरह के सवाल उठने लगे हैं। अगर बुनियादी तौर पर देखा जाए तो किसी भी राज्य के नागरिक को राज्य से दो प्राथमिक अपेक्षाएँ होती हैं- त्वरित व सस्ता न्याय एवं सुरक्षा। अगर ये दो चीज़ें नागरिकों को मुहैया हैं, तो तमाम समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं।

प्राचीन कथानकों में त्रेता युग के राम-राज्य की चर्चा अकसर ही न्याय की नज़ीर के तौर पर दी जाती है। न्यायिक राजा के रूप में विक्रमादित्य का उद्धरण भी इतिहास के पन्नों में अकसर नज़र आ जाता है। आज हम त्वरित व सस्ते न्याय का दावा भले ही कर रहें हैं, किन्तु अदालतों में लम्बित वादों की फहरिस्त कुछ और ही बयाँ कर रही है। न्यायालयों में लम्बित मामलों को देखते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ए0पी० शाह ने कहा था- 'अगर ऐसा ही चलता रहा तो लम्बित पड़े मामलों को निपटाने में 450 साल लग जाएंगे।'

प्रसिद्ध कवि कैलाश गौतम की इन पंक्तियों में भी हमारी न्यायिक व्यवस्था की तरफ बहुत ही खूबसूरत अंदाज़ में इशारा किया गया है-

'भले जैसे-तैसे गिरस्ती चलाना
भले जा के जंगल में धूनी रमाना
मगर मेरे बेटे कचहरी न जाना
कचहरी शरीफों की ख़ातिर नहीं है
उसी की क़सम लो जो हाज़िर नहीं है।'

अतः हमें इस गुज़रती हुई शाम और दस्तक देती हुई नई सुबह के दरमियानी वक़्त में अपने अन्दर छिपे सत्य को पहचान कर अपनी न्यायिक व्यवस्था को और मज़बूत बनाने में ज़ंजीर की इक छोटी सी, किन्तु अहम कड़ी बनना होगा। अंततः दस्तक दे रहे नूतन वर्ष से हम मशहूर शायर फैज़ लुधियानवी के शब्दों में यही उम्मीद रखेंगे कि-

'तू नया है तो दिखा सुबह नई शाम नई,
वर्ना इन आँखों ने देखे हैं नए साल कई।'
नये साल की दिली मुबारकबाद।

(मो0 हकीक जलाल)
संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ0प्र0
शाखा–लखीमपुर

डिजिटल क्रांति और डिजिटलीकरण

डिजिटल क्रांति के इस दौर में जहाँ सारे सरकारी और अर्धसरकारी कार्य डिजिटाइज हो रहे है जिससे कार्यो को तीव्र गति मिल रही है, साथ ही साथ सही समय पर और हर वर्ग की हर समस्या का भी समाधान तत्परता के साथ हो जा रहा है, उसी तरह का कुछ प्रयास न्यायपालिका में भी निरंतर जारी है जिससे सभी को न्याय समय से और सुगमता से मिल सके, न्यायपालिका हेतु डिजिटल कंप्यूटर रूम की स्थापना से डिजिटल क्षमताओं में भी सुधार होगा और भारत के डिजिटल इंडिया विज़न के हिस्से के रूप में डिजिटलीकरण की शुरुआत को बढ़ावा मिलेगा।

इससे न्यायपालिका के समग्र कामकाज और प्रदर्शन में सुधार करने में मदद मिलेगी। यह आम आदमी को उसके दरवाज़े पर त्वरित, पूर्ण और किफायती न्याय प्रदान करने के लिये भी प्रोत्साहन देगी। न्यायपालिका निरंतर ही डिजिटाइज सिस्टम की तरफ अग्रसर होने में प्रयासरत है। उसी कड़ी में सभी न्यायालय कार्य CIS साफ्टवेयर के माध्यम से संचालित होने लगे है, साथ साथ CIS साफ्टवेयर को भी निरंतर अपग्रेड किया जा रहा है जिससे न्यायालय के कार्यो को और सुगमता और तत्परतापूर्वक किया जा सके। CIS (केस इंफार्मेशन सिस्टम) साफ्टवेयर भारतीय न्यायपालिका को और अधिक पारदर्शी और अधिक मुकदमे के अनुकूल बनाने के लिए ई-समिति की पहल के तहत एक बड़ा कदम है।

कोरोना काल ने जहाँ देश को लाक डाउन में रखा उस समय भी न्यायालय देश मे सुचारू रूप से अपनी सेवा दे रहा था, कहने की जरूरत नहीं है कि कोविड -19 के प्रकोप ने विभिन्न तरीकों से मुकदमेबाजी और मध्यस्थता पर अपना प्रभाव छोड़ा है, जिसके कारण दूरस्थ सुनवाई के बढ़ते उपयोग से लेकर सामान्य अदालतों के बंद होने तक शामिल हैं। कम से कम व्यवधान सुनिश्चित करने की दृष्टि से, देश की समस्त न्यायालयों ने अनिवार्य इलेक्ट्रानिक फाइलिंग, केवल महत्वपूर्ण मामलों की सुनवाई को प्रतिबंधित करने और वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित करने सहित प्रौद्योगिकी को तेजी से अपनाया है।

देश मे प्रतिदिन बढ़ते हुए केसेस की संख्या और उतनी तेजी से केसेस का निपटारा न हो पाना भी एक मुख्य समस्या है, देश मे लंबित पुराने केसेस का त्वरित निस्तारण होने हेतु भारत सरकार ने देश में मुकदमों की बढ़ती हुई संख्या को कम करने का निर्णय लिया है, इसके लिए सरकार ने न्याय मित्र योजना का शुभारम्भ किया है। इस योजना से देश के 10 वर्ष पुराने मुकदमों का निर्णय शीघ्रता से किया जायेगा। इस योजना के माध्यम से पीड़ित व्यक्ति को जल्दी न्याय प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। डिजिटल स्तर को बढ़ावा देने के उद्देश्य से

ही न्यायपालिका निरंतर डिजिटल रिकार्ड, ई फ़ाइलिंग और वीडियो कान्फ्रेंसिंग (वर्चुअल कोर्ट्स) की तरफ भी अग्रसर है । डिजिटल रिकार्ड के तहत अदालती रिकार्ड को डिजिटाइज़ करने की प्रक्रिया में दस्तावेज़ों और मामले की जानकारी को स्कैन करके उन्हें एक डेटाबेस में ले जाना शामिल है। हर केस को एक यूनिक CNR (केस नंबर रिकार्ड) दिया जायेगा , CNR सभी मामलों में दी गई 16 अंकों की एक अद्वितीय संख्या है। संक्षेप में कहें तो यह विशिष्ट केस आइडेंटिटी नंबर है जिससे किसी भी केस की पहचान की जा सकती है। CNR नंबर की सहायता से देश की किसी भी अदालत से हर केस की एक यूनिक पहचान बनी रहेगी, सूचना प्रणाली के माध्यम से दायर प्रत्येक मामले को सीएनआर नंबर दिया गया है। साथ ही साथ अदालतें भीड़ को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग भी कर रही हैं, विशेष रूप से ऐसे मामलों में जिनमें यातायात उल्लंघन जैसे छोटे अपराध शामिल हैं। यह तकनीक अधीनस्थ न्यायालयों कार्य प्रणली को और कुशलतापूर्वक न्याय प्रदान करने में सहयता प्रदान करेगी। वर्चुअल कोर्ट एक अवधारणा है, जिसका उद्देश्य अदालत में वादी या वकील की उपस्थिति को समाप्त करना और वर्चुअल प्लेटफार्म पर मामलों का निर्णय करना है। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (एनईजीपी) के हिस्से के रूप में सुप्रीम कोर्ट ई-समिति द्वारा निर्देशित ई-कोर्ट मिशन परियोजना ने अधिक सुलभ, सस्ती, भरोसेमंद और पारदर्शी न्यायिक प्रणाली बनाने के इरादे से भारतीय अदालतों का डिजिटलीकरण शुरू किया।

जहाँ एक तरफ देश की सबसे बड़ी उच्च न्यायालय में डिजिटलीकरण का काम तेजी से हो रहा है, वही राज्य सरकार ने भी आम आदमी को सरलता, सुगमता और आसानी से न्याय मिल सके इसके तहत प्रदेश की समस्त अधीनस्थ अदालतों के भी डिजिटलीकरण हेतु प्रयास शुरू कर दिया है। रिकार्ड्स को डिजिटाइज करने से न्यायालय के समस्त कार्यो में तेजी आएगी और न्यायालय कर्मियों को भी अत्याधिक लाभ मिलेगा। अभी जहाँ न्यायालय कर्मियों पर अत्याधिक फ़ाइलो का बोझ होता है और उनके रखरखाव में जैसे दीमक लगने से रोकना, फ़ाइल को चोरी होने, बर्बाद होने और भीगने से बचाने हेतु बहुत प्रयास करना पड़ता है, जब फ़ाइलो को स्कैन करके उनको डिजिटल रूप में सुरक्षित रख लिया जाएगा तो इससे न्यायालय कर्मियों को बहुत लाभ होगा, साथ साथ फ़ाइलो के रखरखाव में भी सुगमता होगी, तत्परता से न्यायालय के कार्यो को करने में सहायता भी होगी। और तत्परता से फ़ाइल को देश की किसी भी न्यायालय में सुरक्षित तरीके से देखा और पढ़ा जा सकेगा जिससे त्वरित निर्णय में भी सहायता मिलेगी।

'भौतिक संपत्ति की तुलना में डिजिटल संपत्ति बहुत बड़ी, सरल, सुगम और तेज होगी और केंद्रीकृत होने से त्वरित और अधिक उपयोगी होगी। साझा करना अच्छा है, और डिजिटल तकनीक के साथ साझा करना आसान है। डिजिटल परिवर्तन का कोई विकल्प नहीं है। दूरदर्शी कंपनियां अपने लिए नए रणनीतिक विकल्प तैयार करेंगी - जो अनुकूलन नहीं करेंगे वे विफल हो जाएंगे।'

वसीम अहमद (वरिष्ठ सहायक जनपद न्यायालय, हमीरपुर)
सम्बद्धः माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

शायद वो खुश नहीं है.....

विपिन कुमार मौर्य
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, जालौन
सचिव, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र०,
शाखा-जालौन

वो कहते है कि मेरे साथ खुश है. मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
वो हमारी आवाज सुने बिना रह नहीं पाते,
मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
उनको हमेशा मेरी सलामती की चिंता रहती हैं,
मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।

मेरे दुःख मे वो भी दुःखी हो जाते है, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
मेरे सुख में वो खुश हो जाते है, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
अपना पूरा वक्त वो मेरे साथ गुजारतें है, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
मेरा गुस्सा करना भी उनको अच्छा लगाता है,
मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।

मेरे दूर जाने के डर से वो डर जाते हैं, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं है।
मैं चाहता हूँ कि वो हमेशा खुश रहें, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं है।
उन्हें दूर रहना पसन्द है, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
मैं भी उनके बिना खुश नहीं हूँ, मगर वो मेरे साथ खुश नहीं हैं।
शायद वो खुश नहीं है..... शायद वो खुश नहीं है।

Sonnet to My Teacher

(नितेश कुमार 'अनपढ़')
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बाराबंकी

On the remembering you my best,
I find myself very unrest.
And when I think of you,
Your sweet memories get on my mind rest.

Oh Great! Your sweet and pretty face
Looks me like solar rays.
And your heart a wet cloth,
Your guidance help to search my path

Never I want to forget you
Because you have affected me too.
You are great, kind and wise,
So one may easily get surprise.

This is your effort and my gain
That I remember you again and again.

- Nitesh Kumar 'Anpadh'

आसमान!
बस हाथ भर की दूरी पर हो मुझसे।
अंजुरी में भरकर उलीच सकती हूँ तुम्हें गंगा!
समय! तुमको तो कलाई पर बांध रखा है।
मुमकिन नहीं मेरे लिए कि
दुबक जाऊँ तुम में।

~●~

यह मैं हूँ।
और मेरा हाथ
मेरी तहों के भीतर नहीं
दुनिया के नक़्शे पर पड़ा है।

• अक़ीदतें •

श्री अनुज वर्मा
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, औरैया

बच्चों का कोना

संपदा सिंह

सुपुत्री श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा- भदोही

अविका आस्थाना

Class - 6

सुपुत्री श्री आनन्द आस्थाना

जनपद न्यायालय, कुशीनगर

अंशिका शुक्ला

Class-3rd

सुपुत्री श्री आशुतोष शुक्ल

जनपद न्यायालय, बस्ती

आराध्या गुप्ता भांजी श्री संतोष कुमार गुप्ता (वरिष्ठ सहायक, जनपद न्यायालय, इटावा)

पक्षी

गुस्से से दूसरे पक्षी से
बोली या पिंजरे
क्यों है मेरे आगे पीछे ?
इन्हें खोल दो
हमें अपने आप पर छोड़ दो !

यह सुनकर और पक्षीया
बोली कि हां
बहुत दिन हुए
हमें अपनी मन की मुराद पूरी किए हुए !

यह देख और सुन कर
मैं सोचा
यह कैसी इच्छा इनके मन में जगी ?
मैं इन्हें छोड़ देता हूं
यह अपनी मन की मुराद पूरी कर ले !

रुद्र सिंह
सुपुत्र श्री समरजीत सिंह (अध्यक्ष)
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०
शाखा- भदोही

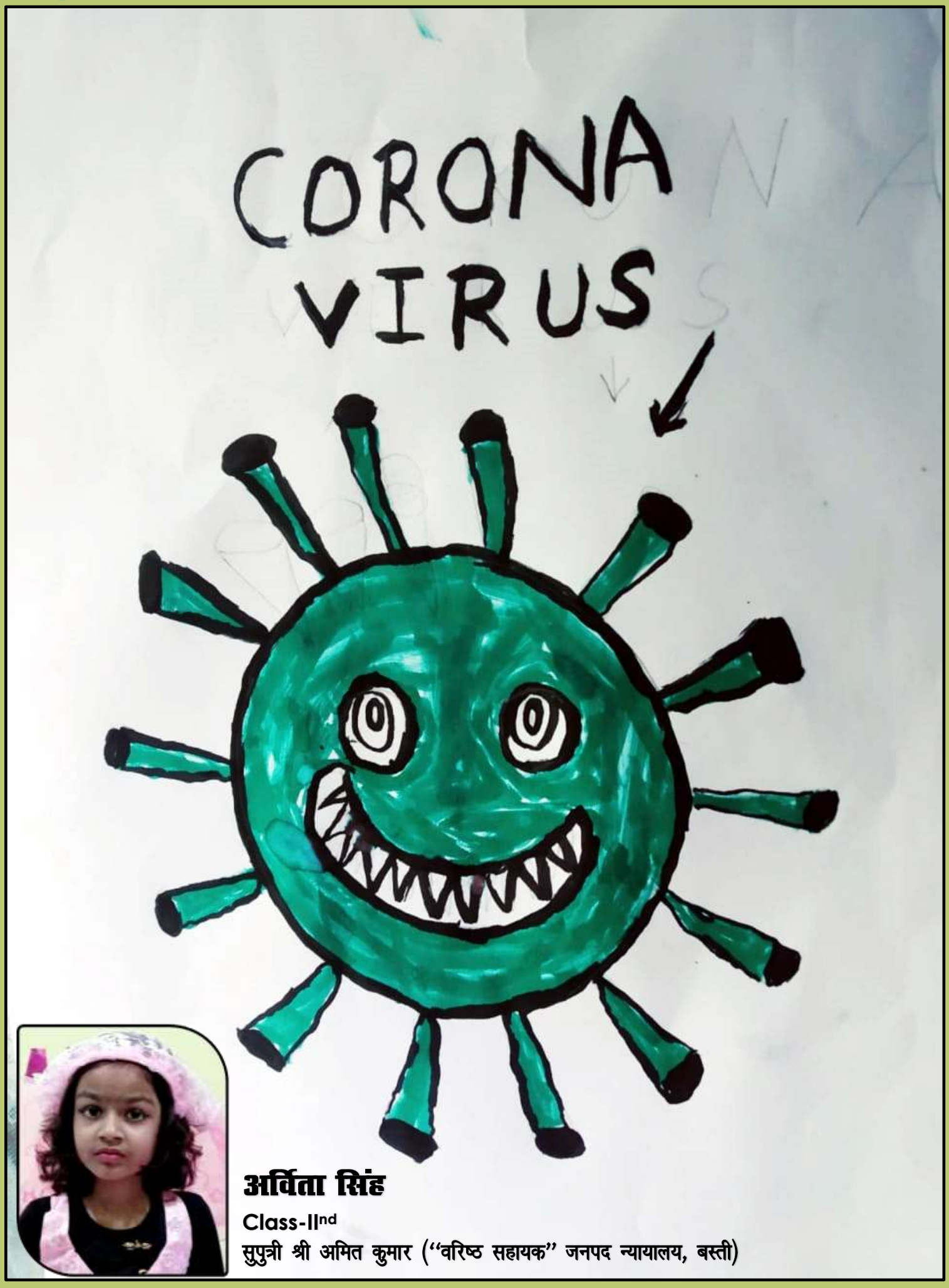

अर्विता सिंह

Class-IInd

सुपुत्री श्री अमित कुमार (“वरिष्ठ सहायक” जनपद न्यायालय, बस्ती)

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
(राजाज्ञा सं0 1083/7-137, 17/27-1928 तथा संख्या 99/7139, दिनांक 22 जनवरी 1931 द्वारा मान्यता प्राप्त)
Website : www.dnksup.com, Email :-contact@dnksup.com

संगठन के माननीय सदस्य उनके परिजनों, हित मित्रों एवं शुभचिन्तकों को

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं